



सांध्य दैनिक 4PM



यदि आपका प्रिय सौ बार रुठे तो भी रुठे हुए प्रिय को मनाना चाहिए, क्योंकि यदि मोतियों की माला टूट जाए तो उन मोतियों को बार-बार धागे में पिरो लेना चाहिए।
-रहीम दास

मूल्य
₹ 3/-

जिंद...सच की

www.4pm.co.in | www.facebook.com/4pmnewsnetwork | @Editor_SanjayS | YouTube | 4pm NEWS NETWORK

● वर्ष: 12 ● अंक 261 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, शुक्रवार 30 अक्टूबर, 2026

मुंबई इंडियंस को नए कप्तान की... 7 कांग्रेस पंजाब फतह के लिए जी-जान... 3 कांग्रेस ने बैंक बनाए, भाजपा उन्हें... 2

मनोज बाजपेयी की जिंदगी के खुलेंगे अनकहे राज!

संजय शर्मा के सवालों से सजेगी मुंबई की शाम

- » संपादक संजय शर्मा की मुहिम, हर माह सजेगी संस्कृति की नई महफिल
 - » संगीत के बाद अब अभिनय की दुनिया के सितारे से रूबरू होंगे दर्शक
 - » कार्यक्रम के टिकट बुकमायशो पर उपलब्ध हैं
- 4पीएम न्यूज नेटवर्क

मुंबई। पर्दे पर कभी पुलिस अधिकारी कभी अपराध की दुनिया का चेहरा और कभी जिंदगी से जुड़ा आम इंसान। भीखू माहत्रे फिल्मी कैरेक्टर से लोगों के दिलों पर राज कर रहे मनोज बाजपेयी हर किरदार में कुछ ऐसी छाप छोड़ जाते हैं जो फिल्म खत्म होने के बाद भी दर्शकों के भीतर लंबे समय तक जिंदा रहती है। उस कलाकार की अपनी कहानी क्या है? सफलता के शिखर तक पहुंचने का रास्ता कितना कठिन था? असफलताओं ने कितना तोड़ा और संघर्ष ने कितना गढ़ा? एक नवंबर को मुंबई में इन सवालों के जवाब मिलेंगे, मौका होगा 4PM तहजीब की विशेष सांस्कृतिक संध्या का जहां अभिनेता मनोज बाजपेयी अपने जीवन और अभिनय यात्रा के अनकहे प्रसंग लोगों के साथ करेंगे। उनके सामने होंगे 4PM के संपादक संजय शर्मा और सामने बैठा होगा वह दर्शक जो अपने पसंदीदा कलाकार को इस बार पर्दे पर नहीं बल्कि जिंदगी की असली कहानी सुनाते हुए देखना चाहता है।



नवंबर को 4PM तहजीब में सिनेमा के दमदार अभिनेता से सीधा संवाद

संजय शर्मा की पहल, हर महीने संस्कृति से मुलाकात

4PM के संपादक संजय शर्मा ने प्रकाशित से आगे बढ़कर कला और संस्कृति के क्षेत्र में संवाद की एक नई पहल की है। 4PM तहजीब के माध्यम से उनकी कोशिश है कि संगीत, साहित्य, सिनेमा और दूसरी सांस्कृतिक विधाओं से जुड़ी हस्तियों को ऐसा मंच मिले जहां दर्शक उनके काम के साथ-साथ उनके

विचारों और जीवनानुभवों से भी जुड़ सकें। इस श्रृंखला की पहली सांस्कृतिक संध्या 24 अक्टूबर को मुंबई में गायिका वैष्णवी शर्मा की संगीत और काव्य प्रस्तुति के साथ आयोजित हुई थी। अब दूसरी कड़ी में मनोज बाजपेयी के साथ बातचीत का कार्यक्रम रखा गया है। संगीत से शुरू हुआ यह सफर अब अभिनय की

दुनिया तक पहुंच रहा है। इस पहल की खासियत यह है कि संस्कृति को केवल मंचीय प्रस्तुति तक सीमित रखने के बजाय उसे संवाद का माध्यम बनाया जा रहा है। कलाकार अपनी यात्रा साझा करें दर्शक प्रश्न पूछें और दोनों के बीच विचारों का आदान-प्रदान हो सके 4PM तहजीब की मूल भावना है।

सत्या से लेकर गैंग्स ऑफ वासेपुर

मुंबई के अंधेरी वेस्ट स्थित मुक्ति ऑडिटोरियम में शाम सात बजे होने वाला यह आयोजन महज एक फिल्मी हस्ती का साक्षात्कार नहीं होगा बल्कि सिनेमा के पीछे छिपे कलाकार से मुलाकात का अवसर होगा। मनोज बाजपेयी की पहचान उन अभिनेताओं में है जिन्होंने

चमक-दमक से अधिक अपने अभिनय की ताकत पर भरोसा किया। 'सत्या' से लेकर 'गैंग्स ऑफ वासेपुर', 'अलीगढ़' और 'सिर्फ एक बंदा काफी है' तक उनकी भूमिकाएं अलग-अलग रंगों में सामने आईं। 'द फैमिली मैन' ने उन्हें नई पीढ़ी के दर्शकों के बीच भी खास पहचान दिलाई। अब सवाल यह है कि इन किरदारों को जीने वाला कलाकार खुद जिंदगी को किस नजर से देखता है? उसके भीतर एक

भूमिका आकार कैसे लेती है? कैमरे के सामने सहज दिखने वाला अभिनेता कैमरे के पीछे किन चुनौतियों से गुजरता है? संजय शर्मा के साथ होने वाली बातचीत इन्हें पहलुओं को सामने लाने का प्रयास करेगी। खास बात यह है कि दर्शकों को भी अपने सवाल पूछने का अवसर मिलेगा। यानी बातचीत केवल मंच से दर्शकों तक नहीं पहुंचेगी बल्कि दर्शकों की जिज्ञासाएं भी मंच तक जाएंगी।

किरदारों से आगे असल जिंदगी के संघर्षों और अनुभवों पर होगी बात

जेन-जी के लिए खास है मनोज बाजपेयी का सफर

मनोज बाजपेयी का सफर उन युवाओं के लिए खास मायने रखता है जो छोटे शहरों और सीमित संसाधनों से निकलकर अपने सपनों को पूरा करना चाहते हैं। बिहार के एक गांव से निकलकर हिंदी सिनेमा में अपनी अलग जगह बनाना आसान नहीं था। अभिनय की दुनिया में पहचान बनाने के लिए उन्हें लंबा संघर्ष करना पड़ा। शुरुआती असफलताओं और सीमित अवसरों के बावजूद उन्होंने अपने लक्ष्य से नजर नहीं हटाई। उनकी सफलता की कहानी केवल पुरस्कारों और लोकप्रिय फिल्मों की सूची नहीं है। यह उस धैर्य की कहानी भी है जो कलाकार को लगातार अपने काम में बेहतर बनने के लिए प्रेरित करता है। यही वजह है कि मनोज बाजपेयी का व्यक्तित्व पर्दे पर नियाए गए किरदारों से कहीं आगे तक जाता है।

4PM तहजीब के बैनर तले सजेगा मंच

4PM तहजीब की इस शाम में दर्शकों को उनके फिल्मी सफर के उन पहलुओं को जानने का अवसर मिलेगा जो आमतौर पर प्रचार और साक्षात्कारों की औपचारिक बातचीत में पीछे छूट जाते हैं। अभिनय के चुनाव किरदारों की तैयारी सफलता के बाद बदलती जिम्मेदारियां और असफलताओं से मिलने वाले सबक ऐसे विषय बातचीत को रोचक बनाएंगे।

मुंबई की शाम सिनेमा और जिंदगी के नाम

महानगर की तेज रफ्तार जिंदगी में ऐसी शामें लोगों को अपने प्रिय कलाकारों से जुड़ने का अवसर देती हैं। मनोज बाजपेयी के प्रशंसकों के लिए यह आयोजन खास होगा क्योंकि यहां वह अपने पसंदीदा अभिनेता को उनकी भूमिकाओं से आगे समझ सकेंगे। एक कलाकार की सफलता के पीछे कितनी तैयारी कितनी असफलताएं और कितने अनकहे अनुभव होते हैं इसका अंदाजा ऐसी बातचीत से ही लगाया जा सकता है। एक नवंबर को शाम सात बजे मुक्ति ऑडिटोरियम में होने वाली इस संध्या के टिकट बुकमायशो पर उपलब्ध हैं। संजय शर्मा की इस पहल में एक तरफ कला के प्रति जिज्ञासा है तो दूसरी तरफ दर्शकों को कलाकार के करीब लाने की कोशिश। मनोज बाजपेयी के साथ होने वाली बातचीत इसी सिलसिले की अगली कड़ी है।



देखिए डबल इंजन का डबल जीरो : अखिलेश

» वाराणसी में सपा की जीत पर राष्ट्रीय अध्यक्ष ने बीजेपी पर कसा तंज
□□□ 4पीएम न्यूज नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में विधान परिषद् की 11 सीट्स के लिए मतगणना संपन्न हो गई है। इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने 6 और समाजवादी पार्टी ने 5 सीटों पर जीत हासिल की है। सपा के लिए सबसे ज्यादा उत्साह की बात यह है कि उसने वाराणसी की शिक्षक और स्नातक दोनों ही सीटों पर अपना कब्जा जमा लिया है। वाराणसी से शिक्षक चुनाव में लाल बिहारी यादव और स्नातक में आशुतोष सिन्हा ने जीत हासिल की है।

इस जीत से सपा के भीतर उत्साह का



माहौल है। इसी क्रम में सपा चीफ अखिलेश यादव ने बीजेपी पर तंज कसा है। बीजेपी के डबल इंजन वाले नारे का इस्तेमाल किया

है। यूपी के पूर्व सीएम ने एक्स पर वाराणसी हैशटैग लगाते हुए लिखा-डबल इंजन का डबल जीरो!

यह मेरी नहीं सपा के एक-एक कार्यकर्ता की जीत : आशुतोष सिन्हा

उधर, वाराणसी स्नातक में जीत से उत्साहित नवनिर्वाचन विधान परिषद् सदस्य आशुतोष सिन्हा ने कहा कि यह जीत मेरी नहीं, बल्कि समाजवादी पार्टी के हर उस नेता और कार्यकर्ता की जीत है, जो पूरे दिल से हमारे साथ खड़े रहे, हमारा समर्थन किया और हमें अपना आशीर्वाद दिया। मैं इस जीत का श्रेय हमारे सम्मानित राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव और समाजवादी पार्टी के उन सभी साथियों, सहयोगियों और शुभचिंतकों को देता हूँ, जिन्होंने हर कदम पर हमारा साथ दिया।



सिन्हा ने कहा कि हमारी पूरी लीडरशिप ने सड़कों पर रातों बिताई और लगातार तीन दिनों तक सुबह से देर रात तक जागती रही, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कोई गड़बड़ी न हो। इस दबाव के कारण, प्रशासन से कोई गलती नहीं हुई। इसलिए, मैं पार्टी के हर उस नेता, कार्यकर्ता और साथी को धन्यवाद देता हूँ और उनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने इस चुनाव में हमारा समर्थन किया।

कांग्रेस ने बैंक बनाए, भाजपा उन्हें बेच रही : राहुल गांधी

» नेता प्रतिपक्ष ने आईडीबीआई बैंक के कर्मचारियों के प्रति समर्थन जताया
□□□ 4पीएम न्यूज नेटवर्क

नई दिल्ली। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने आईडीबीआई बैंक के कर्मचारियों के प्रति समर्थन जताते हुए शुक्रवार को कहा कि सार्वजनिक धन से बने संस्थान जनता के हैं और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को बेचा नहीं जाना चाहिए। कांग्रेस नेता ने आईडीबीआई बैंक के कर्मचारियों के नाम लिखे एक पत्र को 'एक्स' पर साझा किया और बैंक की प्रस्तावित बिक्री को लेकर केंद्र सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने पोस्ट में कहा, कांग्रेस के समय में आईडीबीआई बना, देश का उद्योग खड़ा करने के लिए। मोदी के समय में पहले बोली देखी गई, फिर दाम तय हुआ। कांग्रेस के समय बैंक बनते थे। मोदी के समय में बिकते हैं।

मैं आईडीबीआई बैंक के कर्मचारियों के साथ खड़ा हूँ। गांधी ने पत्र में कहा कि पिछले साल मार्च में आईडीबीआई बैंक के कर्मचारियों के एक समूह ने संसद भवन में उनसे मुलाकात की थी और सवाल किया था कि सरकार उस बैंक को क्यों बेच रही है जिसे कर्मचारियों ने मुनाफे में पहुंचाया है। उन्होंने कहा कि उन्होंने यह मुद्दा लोकसभा में उठाया और सरकार से पूछा कि एक लाभ कमाने वाले सार्वजनिक बैंक को क्यों बेचा जा रहा है तथा उसके कर्मचारियों एवं जमाकर्ताओं के हितों की रक्षा कैसे की जाएगी। कांग्रेस नेता ने दावा किया कि सरकार ने इसका कोई कारण नहीं बताया और अब उसने आईडीबीआई बैंक को कनाडा की कंपनी फेयरफैक्स को बेचने का फैसला किया है। गांधी का कहना है कि कांग्रेस हमेशा मजबूत सार्वजनिक क्षेत्र के साथ



वाणिज्यिक बैंक बनने तक का उसका सफर कठिन रहा

गांधी के मुताबिक, आईडीबीआई की शुरुआत एक अग्रणी विकास बैंक के रूप में हुई थी और वाणिज्यिक बैंक बनने तक का उसका सफर कठिन रहा है। उन्होंने कहा कि सात साल पहले आईडीबीआई बैंक घाटे में था, जबकि पिछले साल उसने 9,000 करोड़ रुपये से अधिक का मुनाफा कमाया। गांधी ने बैंक कर्मचारियों से कहा, "यह बदलाव आपकी मेहनत का नतीजा है।" लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि सार्वजनिक धन से बनाया गया संस्थान जनता का होता है। उन्होंने दावा किया कि वर्तमान में सरकार और भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) की बैंक में कुल 95 प्रतिशत हिस्सेदारी है, जो बिक्री के बाद घटकर 34 प्रतिशत रह जाएगी। गांधी ने कहा कि 2003 में सरकार ने संसद को आश्वासन दिया था कि आईडीबीआई में उसकी हिस्सेदारी हमेशा कम से कम 51 प्रतिशत रहेगी। उन्होंने कहा, यह वादा गले ही कातून में दर्ज न हो, लेकिन संसद से किया गया वादा भारत की जनता से किया गया वादा है।

निजी क्षेत्र के काम करने में विश्वास करती रही है। उन्होंने कहा, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक बेचने के लिए संपत्ति नहीं हैं, बल्कि वे राष्ट्र निर्माण के साधन हैं। कर्मचारियों को समर्थन का भरोसा दिलाते हुए गांधी ने कहा, आपने मुझसे आपके साथ खड़े होने को कहा था। मैं आज आपकी लड़ाई में आपके साथ खड़ा हूँ और आपकी सभी जायज मांगों का पूरा समर्थन करता हूँ। उन्होंने कर्मचारियों से एकजुट और दृढ़ रहने का आह्वान किया।

'कॉमनवेल्थ और ओलंपिक की मेजबानी हरियाणा को मिले'

» कांग्रेस नेता दीपेंद्र हुड्डा ने सीएम सैनी से की मांग
□□□ 4पीएम न्यूज नेटवर्क

चंडीगढ़। कांग्रेस सांसद दीपेंद्र हुड्डा ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को कॉमनवेल्थ खेल 2030 और ओलंपिक खेल 2036 का आयोजन गुजरात की बजाय हरियाणा में कराने का मुद्दा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के समक्ष उठाना चाहिए। इन आयोजनों में अनुमानित 2.34 लाख करोड़ रुपये का निवेश होगा। प्रदेश के खिलाड़ियों के योगदान को देखते हुए यह अवसर हरियाणा को मिलना चाहिए।

उन्होंने कहा कि देश की आबादी में हरियाणा की हिस्सेदारी करीब दो प्रतिशत है लेकिन ओलंपिक दल में प्रदेश के खिलाड़ियों की हिस्सेदारी 21 प्रतिशत और पदकों में योगदान 50 प्रतिशत से अधिक है। इसके बावजूद हरियाणा को मेजबान या सह मेजबान बनाने के लिए प्रस्ताव तक नहीं भेजा गया। हुड्डा ने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार ने कांग्रेस शासन की पदक लाओ, पद पाओ खेल प्रोत्साहन नीतियां बंद कर दी हैं। कांग्रेस के समय बने 481 खेल स्टेडियमों के रखरखाव के लिए भी पर्याप्त बजट नहीं दिया गया। अंतरराष्ट्रीय आयोजन हरियाणा में होने से स्टेडियम, खेल अकादमियों, हाईवे और अन्य बुनियादी ढांचे का विकास होगा तथा खिलाड़ियों को बेहतर सुविधाएं मिलेंगी।



सपा जीतेगी 300 से ज्यादा सीट अखिलेश होंगे सीएम : योगेश सिंह

□□□ 4पीएम न्यूज नेटवर्क

लखनऊ। यूपी के पूर्व मंत्री और समाजवादी पार्टी के नेता योगेश प्रताप सिंह ने शिक्षक और स्नातक एमएलसी चुनाव में बीजेपी पर धांधली का आरोप लगाया है। साथ ही उन्होंने दावा किया है कि 2027 के विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी 300 से 'यादा सीटें जीतकर सरकार बनाएगी और अखिलेश यादव मुख्यमंत्री बनेंगे। वहीं, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और असदुद्दीन ओवैसी को लेकर भी उन्होंने कई राजनीतिक बयान दिए हैं।

योगेश प्रताप सिंह ने शिक्षक और स्नातक एमएलसी चुनाव में धांधली का आरोप लगाते हुए कहा कि शिक्षक और स्नातक एमएलसी चुनाव में 6-5 का परिणाम नहीं रहता, अगर निष्पक्ष मतदान और मतगणना हुई होती। उन्होंने आरोप लगाया कि धांधली के कारण भाजपा यह नतीजा हासिल कर पाई, जबकि परिणाम आठ-तीन के आसपास जा रहा था। सपा नेता ने कहा कि शिक्षित मतदाताओं ने भाजपा को संदेश दे दिया है कि प्रदेश का पढ़ा-लिखा वर्ग अब उसके पक्ष में नहीं है। समाजवादी पार्टी के पूर्व मंत्री योगेश प्रताप सिंह ने दावा किया कि 2027 में समाजवादी पार्टी 300 से 'यादा सीटें जीतकर सरकार बनाएगी। उन्होंने कहा कि अखिलेश यादव मुख्यमंत्री बनेंगे और सरकार बनने पर विकास की योजनाओं को लागू करने के साथ पीडीए और कमजोर वर्गों के साथ हो रहे अन्याय को दूर किया जाएगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संसदीय क्षेत्र वाराणसी में भाजपा की हार को लेकर योगेश प्रताप सिंह ने कहा कि काशी के शिक्षित मतदाताओं और शिक्षकों ने भाजपा को संदेश दिया है कि अब काशी उसकी नहीं रही। उन्होंने प्रधानमंत्री के पिछले लोकसभा



ओवैसी बीजेपी की बी टीम

वहीं, बाबा रामदेव के ओवैसी को लेकर दिए गए बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए सपा नेता ने आरोप लगाया कि असदुद्दीन ओवैसी के चुनाव लड़ने से भाजपा को फायदा होता है, क्योंकि इससे समाजवादी पार्टी के वोटों का बंटवारा होता है। उन्होंने ओवैसी को भाजपा की टीम बताते हुए दावा किया कि उनके आने से विपक्षी वोटों में संघ लगती है। योगेश प्रताप सिंह ने चुनाव आयोग की ओर से सुप्रीम कोर्ट में दाखिल 248 पन्नों के हलफनामे का भी जिक्र किया और उस पर सवाल उठाए।

चुनाव की मतगणना को लेकर भी आरोप लगाए, साथ ही गोरखपुर और बनारस क्षेत्र के एमएलसी चुनाव परिणामों को भाजपा की गुटबंदी से जोड़ते हुए दावा किया कि भाजपा के अंदरूनी मतभेद का असर चुनाव पर पड़ा है। योगेश प्रताप सिंह ने भाजपा नेतृत्व पर अपने कार्यकर्ताओं की उपेक्षा करने का भी आरोप लगाया। उन्होंने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के एक बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि सत्ता हमेशा किसी के पास नहीं रहती और जनता किसी भी नेता को सत्ता से हटा सकती है।



दुलारचंद मर्डर केस में जेल जाएंगे विधायक अनंत सिंह

» सुप्रीम कोर्ट ने एक दिसंबर तक दिया सरेंडर करने का समय
□□□ 4पीएम न्यूज नेटवर्क

नई दिल्ली। शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट ने दुलारचंद यादव हत्याकांड के आरोपी व विधायक अनंत सिंह को 1 दिसंबर तक सरेंडर करने का निर्देश दिया है। मोकामा के विधायक के लिए यह एक बड़ा झटका है। आदेश जारी करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने उनकी जमानत भी रद्द कर दी।

यह आदेश पटना हाई कोर्ट द्वारा अनंत सिंह को दी गई जमानत को चुनौती देने वाली एक याचिका पर सुनवाई के दौरान आया। इस याचिका



में दुलारचंद यादव की हत्या के मामले में उनकी जमानत रद्द करने की मांग की गई थी।

जस्टिस एम.एम. सुदेश और जस्टिस पी.वी. की बेंच ने जांच एजेंसी को भी निर्देश दिया कि वह इस हत्याकांड की जांच चार महीने के भीतर पूरी करे। बेंच ने पटना हाई कोर्ट

के 19 मार्च के उस आदेश को खारिज कर दिया, जिसके तहत अनंत सिंह को जमानत दी गई थी। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि हाई कोर्ट ने मामले की गंभीरता और अनंत सिंह के आपराधिक इतिहास पर ठीक से विचार न करके गलती की है। जमानत को चुनौती देने वाली याचिका दुलारचंद यादव के पोते नीरज कुमार ने दायर की थी। उन्होंने तर्क दिया कि सिंह को राहत देते समय उनके आपराधिक बैकग्राउंड पर ठीक से विचार नहीं किया गया। याचिका में सिंह के आपराधिक रिकॉर्ड का खुलासा न किए जाने पर भी सवाल उठाया गया। इससे पहले की एक

सुनवाई में, याचिकाकर्ता के वकील ने सुप्रीम कोर्ट को बताया था कि सिंह ने अपने 67 आपराधिक मामलों के बारे में पूरी जानकारी नहीं दी थी। यह मामला 2025 के बिहार विधानसभा चुनाव के प्रचार के दौरान राष्ट्रीय जनता दल के पूर्व नेता और जन सुराज पार्टी के समर्थक दुलारचंद यादव की हत्या से जुड़ा है। 30 अक्टूबर 2025 को मोकामा में दुलारचंद यादव की हत्या कर दी गई थी। बताया जाता है कि उस समय JD(U) के टिकट पर चुनाव लड़ रहे अनंत सिंह और जन सुराज के उम्मीदवार पीयूष प्रियदर्शी के चुनाव प्रचार के काफिले आमने-सामने आ गए थे।

कांग्रेस पंजाब फतह के लिए जी-जान से जुटी

आप, भाजपा व शिअद भी तैयारी में लगे

आप सरकार के खिलाफ की तैयारियां तेज

» 4 नवंबर को संगरूर जाएंगे राहुल

» सीएम मान के गढ़ में भरेंगे हुंकार

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। पंजाब में जैसे-जैसे चुनाव करीब आने की आहट शुरू हुई सभी सियासी दल कील कांटे सवारने में लग गए हैं। सबसे ज्यादा मेहनत कांग्रेस कर रही है उसे विश्वास है कि उसको इस बार जीत मिलेगी। वहीं आप, शिअद व भाजपा भी अपनी रणनीति में जुट गई है। कांग्रेस महासचिव के.सी. वेणुगोपाल ने दावा किया कि फरवरी 2027 में पंजाब में कांग्रेस की सरकार बनेगी। उन्होंने आम आदमी पार्टी सरकार पर बेरोजगारी, लचर कानून-व्यवस्था और ड्रग माफिया को संरक्षण देने का गंभीर आरोप लगाया। साथ ही बताया कि राहुल गांधी 4 नवंबर को संगरूर में एक बड़े कार्यक्रम के जरिए सत्ताधारी दल को सीधे चुनौती देंगे।

महासचिव के.सी. वेणुगोपाल ने दावा किया कि फरवरी 2027 में पंजाब में कांग्रेस की सरकार बनेगी। उन्होंने आरोप लगाया कि आम आदमी पार्टी के पांच साल के शासन ने इस सीमावर्ती राज्य को भारी संकट में धकेल दिया है, जहां बेरोजगारी चरम पर है, कानून-व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो चुकी है और ड्रग माफिया को राज्य का संरक्षण मिल रहा है। चंडीगढ़ में राज्य नेतृत्व के साथ कई संगठनात्मक बैठकें करने के बाद पत्रकारों से बात करते हुए, वेणुगोपाल ने पूरे विश्वास के साथ कहा कि जमीनी स्तर से मिल रहे फीडबैक से साफ है कि राजनीतिक माहौल कांग्रेस के पक्ष में तेजी से बदल रहा है। वेणुगोपाल ने कहा कि हमने DCC अध्यक्षों, वरिष्ठ नेताओं और चुनाव लड़ चुके उम्मीदवारों के साथ बैठकें कीं। इसके अलावा, हमने नेताओं, विधायकों और सांसदों के साथ अलग-अलग (वन-टू-वन) बातचीत भी की। हमें पंजाब के सभी नेताओं से इनपुट मिले हैं। इसी वजह से मुझे पूरा भरोसा है कि फरवरी 2027 में पंजाब में कांग्रेस की सरकार बनेगी। वहीं पंजाब में बिगड़ते नशा संकट को लेकर कांग्रेस नेता अमरिंदर सिंह राजा वडिंग ने मुख्यमंत्री भगवंत मान पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने आरोप लगाया कि ड्रग्स के खिलाफ आवाज उठाने वाले सीआरपीएफ जवान और कार्यकर्ताओं को सरकार परेशान कर रही है। वहीं राज्य में बढ़ती हिंसा और मौतों को लेकर केंद्रीय गृह मंत्रालय ने विस्तृत रिपोर्ट मांगी है।



पंजाब के लोग हर दिन बहुत ही खतरनाक हालात में जी रहे

पंजाब के लोग हर दिन बहुत ही खतरनाक हालात में जी रहे हैं, क्योंकि वे रोज जो कुछ देख रहे हैं, उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। पुलिस प्रशासन पर आपराधिक गिरोहों के साथ मिलीभगत का सीधा आरोप लगाते हुए वेणुगोपाल ने कहा कि कानून-व्यवस्था पूरी तरह से धराशायी हो गई है। ड्रग माफिया हर जगह मौजूद हैं और उन्हें पूरा संरक्षण मिल रहा है। पुलिस बल, जिसे ड्रग माफियाओं पर लगाम लगानी चाहिए और उनके खिलाफ कार्रवाई करनी चाहिए, वह अब उन्हें बचा रही है... इन सब चीजों पर शोक लगानी चाहिए। इस हिंसा और नशीले पदार्थों के कारोबार पर लगाम लगनी चाहिए। कांग्रेस पंजाब में शांति बहाल करने के लिए प्रतिबद्ध है, और इसीलिए हम पंजाब की जनता के पास जा रहे हैं। इस राज्य का समर्थन करते हुए, कांग्रेस नेता और पंजाब प्रगति सचिन पायलट ने संगठनात्मक रूपरेखा के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा, हमने अपने सभी उम्मीदवारों, सांसदों, पूर्व मंत्रियों, वरिष्ठ नेताओं और कार्य समिति के सदस्यों के साथ चर्चा की है, ये सभी पंजाब में पार्टी के प्रमुख नेता हैं। हमने पंचायत, ब्लॉक, मंडल, जिला और राज्य स्तरों पर आने वाले समय के लिए अपनी रणनीति तैयार की है, और यह चर्चा पूरी तरह से खुली और स्पष्ट रही। राज्य इकाई के भीतर गुटों का संदेश देते हुए, पायलट ने एक निजी किस्सा साझा किया, जिसमें वरिष्ठ नेता एक साथ भोजन करने के लिए यात्रा पर गए थे।

पंजाब में सच बोलना कब से अपराध हो गया?

कांग्रेस नेता अमरिंदर सिंह राजा वडिंग ने मुख्यमंत्री भगवंत मान और आम आदमी पार्टी सरकार की कड़ी आलोचना की। उन्होंने राज्य में बिगड़ते नशीले पदार्थों के संकट को लेकर गंभीर चिंता जताई। (टिप्पण) पर एक पोस्ट में, उन्होंने सीआरपीएफ के एक जवान के वायरलेस वीडियो का जिक्र किया। इस वीडियो में जवान ने नशीले पदार्थों की उपलब्धता के खिलाफ आवाज उठाई थी और बताया था कि ऐसा करने पर उसे राज्य प्रशासन की ओर से डराव-धमकाया गया और उसके खिलाफ प्रशासनिक कार्रवाई की गई। वडिंग ने सवाल उठाया कि क्या पंजाब में नशीले पदार्थों के सेवन की सच्चाई सामने लाना अब राज्य प्रशासन की नजर में एक अपराध बन गया है? वरिष्ठ ने भगवंत मान सरकार पर आरोप लगाया कि वह उन नागरिकों, सुरक्षाकर्मियों और कार्यकर्ताओं को दबा रही है जो स्थानीय



इंग नेटवर्क का पर्दाफाश करने की हिम्मत करते हैं। उन्होंने कहा कि विरोध की आवाज उठाने पर कोई ठोस समाधान निकालने के बजाय, पुलिस कार्रवाई की जाती है या लोगों को परेशान किया जाता है। उन्होंने कहा कि आज का पंजाब यही है... नशाखोरी रुक नहीं रही है, बल्कि इसके खिलाफ उठने वाली आवाजों को दबाया जा रहा है। यह सवाल किसी आम नागरिक ने नहीं,

बल्कि देश की सुरक्षा में तैनात सीआरपीएफ के एक जवान ने उठाया है। नशे के खिलाफ बोलें तो जेल जाना पड़ता है, सवाल पूछें तो कार्रवाई का सामना करना पड़ता है - भगवंत मान, पंजाब में सच बोलना कब से अपराध हो गया? यह विवाद राज्य भर में हुई कई गंभीर घटनाओं के बाद खड़ा हुआ है। इनमें नशा-विरोधी कार्यकर्ताओं पर सुनियोजित हमले और उनकी हत्याएं (जैसे मानस में प्रमुख कार्यकर्ता परविंदर सिंह झोटा की हत्या) शामिल हैं, साथ ही पीड़ित परिवारों द्वारा किए गए सार्वजनिक विरोध-प्रदर्शन भी हुए हैं। बिगड़ती कानून-व्यवस्था को लेकर राष्ट्रीय स्तर के विपक्षी नेताओं और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने तीखी आलोचना की है। इसके चलते केंद्रीय गृह मंत्रालय ने पंजाब में नशीले पदार्थों से जुड़ी हिंसा और आत्महत्याओं के मामलों पर विस्तृत रिपोर्ट मांगी है।

रैली में पार्टी जुटाएगी 10 लाख लोग

उन्होंने आगे घोषणा की कि लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी, पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान के राजनीतिक गढ़ संगरूर में 4 नवंबर को एक कार्यक्रम के जरिए सत्ताधारी पार्टी को सीधे चुनौती देंगे। पायलट ने कहा, राहुल गांधी जी 4 नवंबर को संगरूर में एक बड़े कार्यक्रम में शामिल होंगे। वहां आम आदमी पार्टी सत्ता में है और संगरूर



एक तरह से उनकी राजधानी है। 4 नवंबर को जब राहुल गांधी जी वहां जाएंगे, तो पूरे राज्य को पता चल जाएगा कि संगरूर के असल हालात क्या हैं। पूरी पार्टी अभी तैयारियों में पूरी तरह जुटी हुई है। उन्होंने जोर देकर कहा कि बदलाव तय है और कांग्रेस ही एकमात्र ऐसी राजनीतिक ताकत है जो आप सरकार को चुनौती दे रही है। भगवंत मान प्रशासन पर तीखा हमला करते हुए, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता ने आरोप लगाया कि पंजाब में आम परिवार बेतहाशा हिंसा और नशीले पदार्थों की तस्करी के कारण डर के साये में जी रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमारा मानना है कि पंजाब हमारे देश के महत्वपूर्ण राज्यों में से एक है... लेकिन पिछले पांच सालों में पंजाब के हालात देखिए। युवा बेरोजगारी से परेशान हैं; वहां कोई नौकरी नहीं है। युवा भारी मुश्किलों का सामना कर रहे हैं और सभी परिवार संकट में हैं।

मरते दम तक कांग्रेसी रहूंगा : राणा गुरजीत

पंजाब के वरिष्ठ विधायक और पूर्व मंत्री राणा गुरजीत सिंह ने कांग्रेस छोड़ने की अटकलों को खारिज किया है। राणा ने कहा कि वह आखिरी सांस तक कांग्रेस में ही रहेंगे। उन्होंने कहा कि उनका परिवार लंबे समय से कांग्रेस से जुड़ा है और पार्टी छोड़ने का सवाल ही नहीं उठता। राणा गुरजीत सिंह ने इन अटकलों पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा, मैं जन्म से कांग्रेसी हूँ और कांग्रेसी के रूप में ही मरूंगा। उन्होंने मीडिया से बिना पुष्टि के खबरें प्रसारित न करने की अपील भी की। उन्होंने कहा कि उनके पिता कांग्रेसी थे, वह स्वयं कांग्रेसी हैं और उनके बेटे की



विचारधारा भी कांग्रेस से जुड़ी है। राणा गुरजीत सिंह ने 2027 के विधानसभा चुनाव में अपने बेटे राणा इंदर प्रताप सिंह की

राजनीतिक संभावनाओं पर भी बात की। उनका बेटा फिलहाल सुल्तानपुर लोधी से निर्दलीय विधायक हैं। राणा गुरजीत सिंह ने अपने बेटे की चुनावी जीत की संभावनाओं पर भरोसा जताते हुए कहा कि टिकट आवंटन में उम्मीदवार की जीतने की क्षमता को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए। कांग्रेस में एक परिवार से एक ही उम्मीदवार को टिकट देने के प्रस्ताव पर उन्होंने सकेत दिया कि यदि पार्टी इस नियम को सख्ती से लागू करती है तो वह अपने बेटे के लिए रास्ता छोड़ सकते हैं। ऐसी स्थिति में वह कपूरथला विधानसभा सीट से अपनी दावेदारी छोड़कर

बेटे को सुल्तानपुर लोधी से टिकट देने की पैरवी कर सकते हैं। यह पूछे जाने पर कि यदि वह कपूरथला से चुनाव नहीं लड़ते तो वहां से कांग्रेस का उम्मीदवार कौन होगा, राणा गुरजीत सिंह ने भरोसा जताया कि पार्टी का उम्मीदवार जीत हासिल करेगा। हालांकि, उन्होंने किसी संभावित उम्मीदवार का नाम नहीं बताया। ये भी पढ़ें राणा गुरजीत सिंह फिलहाल कपूरथला से विधायक हैं जबकि उनके बेटे राणा इंदर प्रताप सिंह ने 2022 के विधानसभा चुनाव में सुल्तानपुर लोधी सीट से निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में जीत दर्ज की थी।



Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_SanjayS

66

अक्सर सुरक्षा और संरक्षण के नाम पर महिलाओं को कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों से दखल से पहले ही बाहर का रास्ता दिखा दिया जाता है। हालांकि इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि खतरनाक या जोखिम भरे कामों में सुरक्षा और स्वास्थ्य मानकों को नजरअंदाज किया जाए।

जिद... सच की

महिलाओं पर सदियों पुरानी रूढ़िवादी सोच खत्म हो

सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही में कार्यस्थल पर महिलाओं के साथ होने वाले लैंगिक भेदभाव और सदियों पुरानी रूढ़िवादी सोच पर एक सख्त टिप्पणी की है, इससे भारत के सामाजिक और श्रम बाजार के ढांचे पर गंभीर बहस शुरू हो गई है। यह मामला सिर्फ चार दशक पुरानी एक कानूनी लड़ाई के पटाक्षेप भर का नहीं है, बल्कि यह इस बात का ज्वलंत प्रमाण है कि हमारे समाज में सुरक्षा और संरक्षण के छद्म आवरण के पीछे महिलाओं को समान अवसरों से वंचित करने की मानसिकता कितनी गहरी रही है। इसे बदलने की कितनी सख्त जरूरत है। सुप्रीम कोर्ट के सामने आया यह ऐतिहासिक मामला 1988 का है। हरियाणा की रहने वाली सुमित्रा ने इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन के करनाल स्थित एलपीजी बॉटलिंग प्लांट में हेल्पर पद के लिए आवेदन किया था। वे निर्धारित योग्यता पूरी करती थीं। चयन प्रक्रिया के अंतिम 49 उम्मीदवारों में उनका नाम शामिल था। इनमें से 43 पुरुष उम्मीदवारों को नियुक्ति दे दी गई, लेकिन सुमित्रा को केवल इसलिए नकार दिया गया क्योंकि वे महिला थीं और उनके काम में भारी एलपीजी सिलेंडर उठाना शामिल था।

अदालत ने इस संकीर्ण सोच पर गहरा प्रहार करते हुए सवाल उठाया कि जब भारत के करोड़ों घरों में महिलाएं खुद भारी-भरकम गैस सिलेंडर उठाती हैं, उसे बदलती हैं और रोजमर्रा के कठिन कार्य करती हैं, तो किसी संगठित नौकरी में केवल महिला होने के आधार पर उन्हें अयोग्य कैसे माना जा सकता है? करीब चार दशक लंबी कानूनी जंग के कारण सुमित्रा की नौकरी की उम्र निकल चुकी थी, इसलिए शीर्ष अदालत ने उन्हें 12 लाख रुपये का एकमुश्त मुआवजा देने का निर्देश दिया। अदालत का यह फैसला केवल आर्थिक राहत देने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उस सामंती मानसिकता पर करारा आघात है, जो किसी व्यक्ति की कार्यक्षमता का मूल्यांकन उसके कौशल, प्रशिक्षण और योग्यता के बजाय उसके लिंग के आधार पर करती है। भारतीय समाज और नीतिगत ढांचे में महिलाओं को जोखिम से बचाने और जोखिम का हवाला देकर उन्हें अवसरों से वंचित करने के बीच हमेशा से एक पतली रेखा रही है। अक्सर सुरक्षा और संरक्षण के नाम पर महिलाओं को कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों से दखल से पहले ही बाहर का रास्ता दिखा दिया जाता है। हालांकि इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि खतरनाक या जोखिम भरे कामों में सुरक्षा और स्वास्थ्य मानकों को नजरअंदाज किया जाए। लेकिन किसी भी काम के जोखिम को कम करने के लिए आधुनिक तकनीक, उचित प्रशिक्षण और सुरक्षा उपकरण मुहैया कराना प्रबंधन और तंत्र की जिम्मेदारी है।

Sanjay

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

वार पर वार दरकती भरोसे की दीवार

केवल तिबारी

कदम-कदम पर टूटते भरोसे के इस दौर में जाने-माने कथाकार सुदर्शन की एक कहानी 'हार की जीत' याद आती है। कहानी का सार इस तरह से है डाकू खड़क सिंह को बाबा भारती का घोड़ा (सुल्तान) बहुत भा जाता है। पहले वह घोड़ा उसे दे देने की विनती करता है। फिर धमकी देता है। जब किसी तरह से बाबा भारती नहीं मानते तो बीमार अपाहिज भेष रखकर मदद मांगता है और बाबा भारती के घोड़े को लेकर भाग जाता है। बाबा भारती उसे रोकते हैं और कहते हैं कि बेशक घोड़ा ले जा, लेकिन धोखा देने की इस कहानी को किसी को बताना मत, नहीं तो कोई किसी पर भरोसा नहीं करेगा। इस कहानी के नायक को दुख इस बात का है कि भरोसा टूटता तो अनर्थ हो जाएगा। कहानी के अंत में डाकू उस घोड़े को चुपचाप बाबा भारती के अस्तबल में बांध आता है, यानी उस पर बाबा की सीख का असर पड़ जाता है, लेकिन आज के दौर में एक के बाद एक भरोसा तोड़ने की खबरें सुर्खियां बन रही हैं।

'हार की जीत' कहानी एक सीख देती थी, लेकिन अब तो आये दिन भरोसा टूटने की खबरें आती हैं। किसी सीख का असर नहीं, धोखेबाज लोगों पर कानून का भी खौफ नहीं। असल में आज के ई-युग में हमारा दायरा जितना बड़ा होता जा रहा है, भरोसे की दीवार में उतने ही छेद बढ़ते जा रहे हैं। एक ओर जहां सोशल मीडिया पर 'दावों' के साथ अनेक बेबुनियाद चीजें परोसी जा रही हैं, वहीं दूसरी ओर कहां और किस स्तर पर किसी के साथ कितना बड़ा धोखा हो जाये कहा नहीं जा सकता। उधर, साइबर ठग हैं जो हर समय इसी पर मंथन करते रहते हैं कि अब कौन-सा जाल बिछाया जाये, इधर, ऐसे भी मामले सामने आए हैं कि जिन पर विश्वास का एक लेबल चस्पा था, वे ही अविश्वास का जाल बुनते रहे। हरियाणा के आईडीएफसी, एयू बैंक फ्रॉड मामला हो या फिर चंडीगढ़ में सरकारी पैसे का

इधर से उधर होना, आखिर क्या है? भरोसे का खून ही तो है। जांच चल रही है, कई अधिकारी निलंबित किए जा चुके हैं, लेकिन भरोसा तो तोड़ा ही गया। शुरुआती जांच में यही सामने आ रहा है कि मौजू-मस्ती के लिए सारे नियम-कानून और अपने ओहदे तक को ताक पर रख दिया गया।

यह तो एक बानगीभर है। आयेदिन ऐसी खबरें आती हैं कि जिन पर भरोसा था, उन्होंने ही इसे तोड़ा। कुछ दिन पूर्व एक खबर आई कि डाक विभाग की एक महिला कर्मचारी ने लोगों के बचत के पैसों में ही गोलमाल कर दिया। जब जांच हुई तो उस अधिकारी को निकाल दिया गया। भरोसे की दीवार पर चारों



ओर से चोट हो रही है। अनेक जगह डॉक्टरों पर आरोप लगते हैं कि उन्होंने मिलीभगत से किसी के इलाज में उन दवाओं और उपकरणों के प्रयोग को भी शामिल किया जिनकी वहां जरूरत ही नहीं थी। सवाल यही कि 'किस पर करें यकीन।' सोशल मीडिया मंचों पर 'लाइक्स' और 'व्यूज' के चक्कर में कोई आयुर्वेद का जानकार बना फिर रहा है तो कोई चुटकियों में बीमारी को खत्म करने का दावा कर रहा है। इसे इस तरीके से परोसा जा रहा है कि अच्छा-खासा समझदार भी उनके झांसे में आ जाये। पिछले दिनों पंजाब के अमृतसर, बिहार-झारखंड के कुछ इलाकों और उत्तराखंड से खबरें आई कि कुछ लोग एंबुलेंस के जरिये नशे का काला कारोबार कर रहे थे। एक एंबुलेंस में तो एक महिला को फर्जी बीमार बनाकर लिटाया गया था। शक

के आधार पर एंबुलेंस को रोका गया तो पूरा खुलासा हुआ। नशे के इस काले धंधे का और भी दुखद पहलू यह भी है कि अक्सर इसमें उनकी संलिप्तता सामने आती है जिन पर इस बात की जिम्मेदारी है कि नशा अपने पांव न पसार सके। पिछले दिनों पंजाब में एक पुलिसकर्मी करोड़ों की हेरोइन के साथ पकड़ा गया। कैसी विडंबना है कि वह कर्मी एंटी ड्रोन स्कॉड में तैनात था। यानी जिसका काम नशे के सौदागरों की धरपकड़ था, वह उनका मददगार बना हुआ था। उसी तरह मानसा में मेडिकल स्टोर में नशा बिकने की बात सामने आई। हर जगह भरोसे का खून। इस खेल में कभी वर्दी का दुरुपयोग और कभी रुतबे का। युवा

पीढ़ी का नाश हो रहा है और सियासत के गलियारों में सिर्फ कीचड़ उछलता दिखता है। वैसे, चारों तरफ अविश्वास और धोखे के आज के माहौल में भी तस्वीर बिल्कुल स्याह नहीं है। अनेक डॉक्टर हैं जो अस्पतालों में अपनी ड्यूटी से ज्यादा समय लगा रहे हैं।

अनेक अधिकारी हैं जो निःशुल्क सेवा भी कर रहे हैं। अनेक समाज सुधारक हैं जो समाज के लिए काम कर रहे हैं। जरूरत है इस बात की कि आज का मीडिया भी धोखे, अविश्वास की खबरों का महिमामंडन करने के बजाय प्रेरक कहानियों को ज्यादा स्थान दे। साथ ही जरूरत है इस बात की भी कि हर जिम्मेदार नागरिक अपना कर्तव्य सही से निभाये। यह कर्तव्य निर्वहन अपनी नौकरी, घर-परिवार और समाज से शुरू होनी चाहिए। भरोसा तो कायम करना होगा।

पंकज चतुर्वेदी

पश्चिमी घाट की धुंध में लिपटी कुद्रेमुख की पहाड़ियां इन दिनों नीले-बैंगनी रंग में रंगी हैं। गंगडिकल्लु, चिट्कलगुडु और कुद्रेमुख राष्ट्रीय उद्यान की शोला घासभूमियों में नीलकुरिंजी खिली है और प्रकृति-प्रेमी उसे देखने पहुंच रहे हैं। यह पौधा सामान्यतः बारह वर्ष में एक बार सामूहिक रूप से खिलता है। इस क्षेत्र में पिछला बड़ा पुष्पन 2018 में दर्ज हुआ था, इसलिए अगले पुष्पन की उम्मीद 2030 के आसपास थी। लेकिन फूल चार साल पहले ही खिल उठे और वनस्पति वैज्ञानिक इसी से हैरान हैं। नीलकुरिंजी पश्चिमी घाट की स्थानिक प्रजाति है, यानी यह प्राकृतिक रूप से दुनिया में कहीं और नहीं मिलती। यह लगभग 1,300 से 2,600 मीटर की ऊंचाई पर शोला घासभूमियों में उगती है। केरल के मुन्नार और इडुक्की, तमिलनाडु की नीलगिरि और पलनी की पहाड़ियां तथा कर्नाटक का कुद्रेमुख इसके प्रमुख ठिकाने हैं।

यह झाड़ी अपने जीवनकाल में एक ही बार खिलती है। फूल और बीज बनने के बाद पूरा पौधा सूखकर मर जाता है। सवाल यह है कि सभी पौधे बारह साल तक चुपचाप बढ़ते रहने के बाद एक साथ क्यों खिलते हैं। सबसे प्रचलित व्याख्या इसे जीवित रहने की रणनीति मानती है। अगर हर पौधा अलग-अलग साल फूलता, तो बीज खाने वाले पक्षी और कीट थोड़े-थोड़े बीजों को आसानी से चट कर जाते। लेकिन जब सभी पौधे एक साथ खिलते हैं, तो इतने बीज पैदा होते हैं कि बीज खाने वाले जीव उन सभी को नहीं खा पाते। जो बीज बच जाते हैं, वे अगली पीढ़ी बनाते हैं। एक साथ खिलने से मधुमक्खियों और तितलियों को भरपूर पराग

नीलकुरिंजी के समय से पहले खिलने का सवाल



मिलता है और अलग-अलग पौधों के बीच परागण की संभावना बढ़ती है। इसके बावजूद, नीलकुरिंजी के बारह साल में एक बार खिलने का रहस्य पूरी तरह नहीं सुलझा है। पौधों के भीतर वह कौन-सी घड़ी है, जो बारह वर्ष गिनती है? पहाड़ों पर दूर-दूर फैले पौधे आपस में तालमेल कैसे बिठाते हैं? इसका पक्का जैविक या आनुवंशिक तंत्र अब तक स्थापित नहीं हुआ है। तापमान, वर्षा और मिट्टी की नमी की भूमिका का अनुमान लगाया जाता है, लेकिन यह अभी केवल अनुमान ही है। इस बार का समय से पहले खिलना एक सवाल खड़ा करता है।

पहली प्रतिक्रिया यही होती है कि यह जलवायु परिवर्तन का असर है। लेकिन कुद्रेमुख में इस पुष्पन के लिए जलवायु परिवर्तन को सीधे जिम्मेदार ठहराने का कोई वैज्ञानिक प्रमाण अभी नहीं है। वनस्पतिशास्त्रियों की सलाह भी यही है कि उपलब्ध जानकारी के आधार पर इसे सीधे जलवायु परिवर्तन से जोड़ना उचित नहीं होगा। इस क्षेत्र में पिछले करीब एक महीने से कुछ ही जगहों पर फूल खिल रहे हैं। हो

सकता है कि यह पूरी प्रजाति का बड़ा सामूहिक पुष्पन न होकर किसी स्थानीय समूह या पौधों की ऐसी अलग पीढ़ी का पुष्पन हो, जो 2018 में नहीं खिली थी। एमईएम कॉलेज के वनस्पति विज्ञान विभाग की अध्यक्ष के अनुसार, सीमित स्तर पर पुष्पन इस स्थानीय पौध-समुदाय के चक्र में विविधता का संकेत हो सकता है।

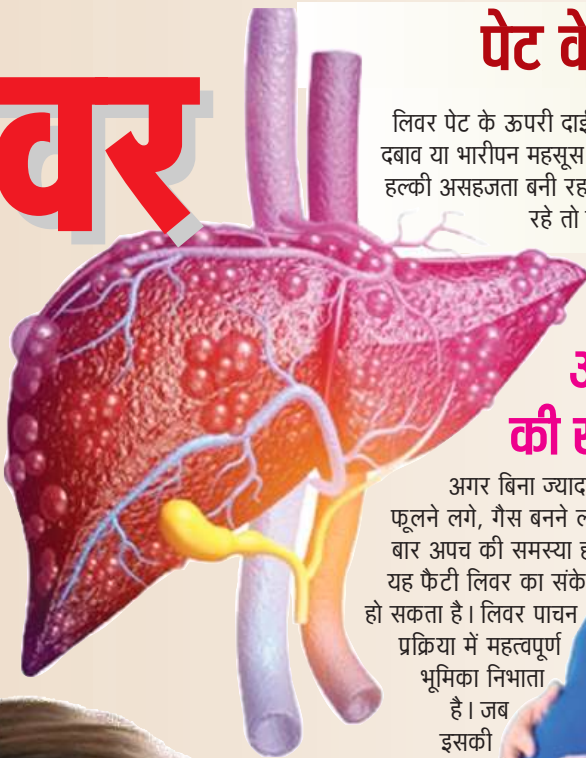
केरल के इडुक्की जिले के पीरुमेड में भी हाल में सीमित क्षेत्र में फूल आने की खबर आई थी। इससे पता चलता है कि अलग-अलग समूहों के फूलने का समय हर जगह एक-सा नहीं होता। अगर ऐसा है, तो बारह साल की लय उतनी कठोर नहीं है, जितनी हम मानते आए हैं। इस पौधे पर शोध तो हुआ है, लेकिन इसके कई पहलुओं पर अभी भी पर्याप्त जानकारी उपलब्ध नहीं है। हाल के एक मुक्त-पहुंच समीक्षा-पत्र में इसके वर्गीकरण, पारिस्थितिकी, फूलने के ढर्रे, औषधीय गुणों और संरक्षण से संबंधित उपलब्ध साहित्य को एक जगह जुटाया गया है। उसमें 1838 से 2018 तक के पुष्पन-अभिलेखों का उल्लेख है। इस बार का समय से पहले खिलना हमारी अधूरी समझ

को बेहतर बनाने के लिए एक नया और कीमती आंकड़ा है, बशर्ते इसे ठीक से दर्ज किया जाए। पिछले दो दशकों के तापमान, वर्षा और नमी के रिकॉर्ड खंगालने होंगे। यह भी मिलान करना होगा कि 2018 में किन ढलानों पर फूल आए थे और अब किन ढलानों पर आए हैं। पश्चिमी घाट के स्थानीय समुदायों के पास पुष्पन की पीढ़ियों पुरानी स्मृतियां हैं, जो उनके लिए समय गिनने का साधन रही हैं। इन स्मृतियों को भी शोध का हिस्सा बनाना चाहिए। शोला घासभूमियां पहाड़ों पर पानी को थामने और धीरे-धीरे छोड़ने वाले स्पंज का काम करती हैं। नीलकुरिंजी के फूल मधुमक्खियों, तितलियों और दूसरे परागण करने वाले जीवों के लिए भोजन और पराग का बड़ा स्रोत हैं।

लेकिन इसका प्राकृतिक आवास सिकुड़ रहा है। वर्ष 2024 में अंतरराष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ की लाल सूची में इसका पहली बार वैश्विक स्तर पर आकलन किया गया और इसे असुरक्षित श्रेणी में रखा गया। कुद्रेमुख वन्यजीव प्रभाग के उप वन संरक्षक ने लोगों से अपील की है कि वे दुर्लभ फूलों को निहारें, लेकिन उन्हें छूने, तोड़ने या पौधों को नुकसान पहुंचाने से पूरी तरह बचें। उनके अनुसार, क्षेत्र की लगातार निगरानी हो रही है। ढलानों पर पड़ने वाला हर कदम उस बीज को कुचल सकता है, जिससे अगली पीढ़ी का पौधा उगना है। प्रशासन को भीड़ को तय रास्तों तक सीमित रखना होगा। नीलकुरिंजी का समय से पहले खिलना एक सवाल खड़ा करता है। प्रकृति की घड़ियां उतनी सटीक नहीं हैं, जितनी हमने मान ली थीं। उन्हें समझने के लिए धैर्य, आंकड़ों और विनम्रता की जरूरत है। इसे जलवायु संकट का प्रमाण घोषित कर देना भी जल्दबाजी होगा और एक सुंदर संयोग कहकर टाल देना भी।

फैटी लिवर के हैं शुरुआती ये पांच लक्षण

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी, अनियमित खानपान और शारीरिक गतिविधि की कमी के कारण फैटी लिवर की समस्या तेजी से बढ़ रही है। पहले यह बीमारी अधिकतर शराब पीने वाले लोगों में देखी जाती थी, लेकिन अब खराब लाइफस्टाइल, मोटापा, डायबिटीज और जंक फूड के बढ़ते सेवन के कारण बिना शराब पीने वाले लोग भी इसकी चपेट में आ रहे हैं। सबसे बड़ी चिंता की बात यह है कि फैटी लिवर के शुरुआती लक्षण अक्सर बहुत हल्के होते हैं या कई बार बिल्कुल दिखाई नहीं देते। इसी वजह से अधिकांश लोगों को बीमारी का पता तब चलता है, जब लिवर को काफी नुकसान पहुंच चुका होता है। यदि समय रहते इसके शुरुआती संकेतों को पहचान लिया जाए और जीवनशैली में जरूरी बदलाव किए जाएं, तो इस समस्या को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है।



पेट फूलना और अपच की समस्या

अगर बिना ज्यादा खाने के भी पेट फूलने लगे, गैस बनने लगे या बार-बार अपच की समस्या हो, तो यह फैटी लिवर का संकेत हो सकता है। लिवर पाचन प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब इसकी कार्यक्षमता प्रभावित होती है, तो भोजन सही तरीके से पच नहीं पाता, जिससे पेट भारी लगना, गैस और बदहजमी जैसी समस्याएं हो सकती हैं।

लगातार थकान और कमजोरी

फैटी लिवर का सबसे आम शुरुआती लक्षण लगातार थकान महसूस होना है। पर्याप्त नींद लेने के बाद भी शरीर में ऊर्जा की कमी बनी रहती है और रोजमर्रा के छोटे-छोटे काम करने में भी कमजोरी महसूस हो सकती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि लिवर शरीर से विषैले पदार्थों को बाहर निकालने और ऊर्जा के संतुलन में अहम भूमिका निभाता है। जब लिवर में ज्यादा फैट जमा हो जाता है, तो उसकी कार्यक्षमता प्रभावित होने लगती है, जिससे व्यक्ति हमेशा थका हुआ महसूस कर सकता है।

भूख कम लगना और मतली होना

फैटी लिवर से पीड़ित कई लोगों की भूख धीरे-धीरे कम होने लगती है। खाना देखकर मन नहीं करता या थोड़ी मात्रा में खाने के बाद ही पेट भरा हुआ महसूस होता है। इसके साथ कुछ लोगों को जी मिचलाना या हल्की मतली भी हो सकती है। यदि यह समस्या लगातार बनी रहे तो लिवर की जांच कराना उचित रहता है।

पेट के आसपास तेजी से चर्बी बढ़ना

पेट के आसपास लगातार चर्बी बढ़ना फैटी लिवर का एक बड़ा जोखिम संकेत माना जाता है। मोटापा, खासकर पेट की चर्बी, लिवर में फैट जमा होने की संभावना बढ़ा देता है। अगर वजन बढ़ने के साथ थकान, अपच और पेट के दाईं ओर भारीपन जैसे लक्षण भी दिख रहे हैं, तो इसे सामान्य मोटापा मानकर नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। समय रहते जांच कराने और खानपान व जीवनशैली में बदलाव करने से स्थिति को बिगड़ने से रोका जा सकता है। इसके अलावा जैसे-जैसे महिलाएं मेनोपॉज के करीब पहुंचती हैं, तो उनकी बॉडी में एस्ट्रोजन का स्तर काफी कम हो जाता है। हार्मोन के स्तर में उतार-चढ़ाव होने की वजह से पेट के आसपास के हिस्सों में अतिरिक्त चर्बी जमा हो सकती है।



हंसना मना है

पहला सरदार दूसरे सरदार से: मैंने अपनी वाइफ को 12वीं पास करवाई, फिर, बीए, फिर एमए, और उसकी सरकारी जॉब लगवा दी, अब क्या करूं? दूसरा सरदार: अच्छा लड़का देख कर शादी कर दे!

सरदार ट्रेन कि पटरी पर सो गया, एक आदमी बोला- ट्रेन आएगी तो मर जायेगा, सरदार: साले, अभी प्लेन ऊपर से गया, कुछ नहीं हुआ, तो ट्रेन क्या चीज है?

लड़का: यार, मुझे उस लड़की से बचाओ, दोस्त: क्यों? लड़का: जब से मैंने कह दिया है दिल चीर के देख तेरा ही नाम होगा, तबसे 'चाकू' लेके पीछे पड़ गयी है!

गधा: यार मालिक बहुत मारते है? कुत्ता: घर छोड़ दे? गधा: नहीं यार! वो हमेशा अपनी बेटी से बोलता है, एक दिन तेरी शादी गधे से कर दुंगा। बस इसी उम्मीद में बैठा हूं!

प्रेमिका- तुमको पता है कल मेरा बर्थडे है मुझे क्या गिफ्ट दोगे, प्रेमी - जो तुम चाहो मेरी जान, प्रेमिका- मुझे रिंग चाहिए प्रेमी- ठीक है रिंग दूंगा पर उठाना मत, मेरा बैलेंस कम है...

कहानी

हाथी और शेर

एक जंगल में एक शेर अकेला बैठा हुआ था। वह सोच रहा था कि मेरे पास तो तेज धारदार मजबूत पंजे और दांत हैं। साथ ही मैं एक बहुत ही ताकतवर जानवर भी हूँ, लेकिन फिर भी जंगल के सारे जानवर हमेशा मोर की ही तारीफ क्यों करते हैं। शेर को इस बात से बहुत जलन होती थी। जंगल के सभी जानवर कहते थे कि मोर जब भी अपने पंख फैलाकर नाचता है, तो वह बहुत सुंदर लगता है। यही सब सोचकर शेर बहुत दुखी हो रहा था। वह सोच रहा था कि इतना ताकतवर होने और जंगल का राजा होने पर भी कोई उसकी तारीफ नहीं करता है। तभी वहां से एक हाथी जा रहा था। वह भी काफी दुखी था। जब शेर ने उस दुखी हाथी को देखा, तो उससे पूछा, तुम्हारा शरीर इतना बड़ा है और तुम ताकतवर भी हो। फिर भी इतने दुखी क्यों हो? तुम्हें क्या परेशानी है? दुखी हाथी को देखकर शेर ने सोचा कि क्यों न मैं इस हाथी के साथ अपना दुख बांट लूं। उसने हाथी से पूछा कि क्या इस जंगल में ऐसा कोई जानवर है, जिससे तुम्हें जलन होती हो? हाथी ने कहा कि जंगल का सबसे छोटा जानवर भी मुझ जैसे बड़े जानवर को परेशान कर सकता है। शेर ने पूछा कि वह कौन सा छोटा जानवर है? हाथी ने कहा कि महाराज, वो जानवर चींटी है। वह इस जंगल में सबसे छोटी है, लेकिन जब भी वो मेरे कान में घुसती है, तो मैं दर्द के मारे पागल हो जाता हूँ। हाथी की बात सुनकर शेर को समझ में आ गया कि मोर तो मुझे चींटी की तरह परेशान भी नहीं करता है, फिर भी मुझे उससे जलन होती है। ईश्वर ने सभी प्राणियों को अलग-अलग खामियां और खूबियां दी हैं। इस तरह शेर को यह समझ में आ गया कि उस जैसे ताकतवर जानवर में भी खूबियों के साथ कमियां हो सकती हैं। इससे शेर के मन में उसका खोया हुआ आत्मविश्वास फिर से बढ़ गया और उसने मोर से जलन करना बंद कर दिया।

7 अंतर खोजें



पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951



मेप कार्यक्षेत्र में नए अवसर और तरक्की मिलेगी। व्यापार में नए सौदे लाभप्रद रहेंगे। प्रियजनों के साथ मधुरता बनी रहेगी। आर्थिक मामलों में सुधार होगा, लाभ मिलेगा।



वृषभ सहकर्मियों का साथ मिलने से प्रोजेक्ट समय पर पूरा होगा। निवेश में लाभ की पूरी संभावना है। जीवनसाथी के साथ संबंध और मजबूत होंगे।



मिथुन नई योजनाओं से दफ्तर में सफलता मिलेगी। व्यापारिक यात्रा लाभदायक सिद्ध होगी। परिवारिक जीवन में खुशहाली रहेगी। आय के नए रास्ते खुलेंगे, लाभ होगा।



कर्क अधिकारियों से प्रोत्साहन और सम्मान मिलेगा। व्यापार में विस्तार होगा, नए सौदे मिलेंगे। परिवार में सुख और शांति बनी रहेगी। अटका हुआ धन वापस मिल सकता है।



सिंह आपकी कार्यशैली की सर्वत्र सराहना होगी। व्यापारिक गतिविधियों में तेजी आएगी, फायदा होगा। प्रेम संबंधों में नयापन और आकर्षण रहेगा।



कन्या दफ्तर में एकाग्रता से काम करें, गलतियों से बचें। लेन-देन के मामलों में सावधानी रखें। बातचीत में संयम रखें, मिठास बनाए रखें। बजट के अनुसार ही खर्चा करें।



तुला पदोन्नति या नई जिम्मेदारी मिल सकती है। साझेदारी के काम में बड़ा मुनाफा होगा। दाम्पत्य जीवन में सुख और सामंजस्य रहेगा। धन प्राप्ति के योग बने हुए हैं।



वृश्चिक मेहनत का उचित फल मिलेगा, पद बढ़ेगा। व्यापार में नए प्रयोग लाभदायक सिद्ध होंगे। परिवार के साथ आनंददायक समय बीतेगा। अचानक धन लाभ होने के आसार हैं।



धनु बौद्धिक कार्यों में सफलता मिलेगी, मान बढ़ेगा। नए सौदे व्यापारिक स्थिति मजबूत करेंगे। सतान पक्ष से शुभ समाचार मिलेगा। धन संचय के प्रयास सफल रहेंगे।



मकर दफ्तर में धैर्य से काम लें, सफलता मिलेगी। कागजी कार्यवाई में स्पष्टता बनाए रखें। परिवार में पुराने विवाद सुलझ सकते हैं। अनचाहे खर्चों पर लगाम लगाएं।



कुम्भ नई कार्यशैली से कार्यस्थल पर प्रशंसा मिलेगी। व्यापार में नए सौदों से बड़ा मुनाफा होगा। दोस्तों के साथ संबंध और प्रगाढ़ होंगे। वित्तीय लाभ के अच्छे योग बन रहे हैं।



मीन कार्यस्थल पर आपके विचारों का प्रभाव दिखेगा। व्यापार में नए ग्राहक जुड़ेंगे, बिक्री बढ़ेगी। मांगलिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धन प्राप्ति के कई मार्ग खुलेंगे।

दूधिया बदन वाले बयान पर तमन्ना भाटिया ने अन्नू कपूर पर किया पलटवार

तमन्ना भाटिया अपनी कमाल की अदाकारी और बेबाक खूबसूरती के लिए जानी जाती हैं। बीते साल वेटर्न एक्टर अनु कपूर ने एक पॉडकास्ट के दौरान एक्ट्रेस को लेकर दूधिया बदन वाला बयान दिया था, जिसके बाद सिनेमा जगत में बवाल मच गया और अनु को आलोचनाओं का सामना करना पड़ा। अब इस मामले को लेकर खुद एक्ट्रेस तमन्ना भाटिया ने पहली बार अपनी चुप्पी तोड़ी है और इशारों ही इशारों में अनु कपूर के कमेंट का मुंहतोड़ जवाब दे दिया है।



हाल ही में तमन्ना भाटिया बतौर गेस्ट एनडीटीवी के एक खास कार्यक्रम में शामिल हुईं। इस दौरान उनसे दूधिया बदन वाले मामले को लेकर सवाल पूछा गया कि इस तरह के बयान और सोशल मीडिया पर होने वाली ट्रोलिंग को वह किस नजरिए से देखती हैं। इस पर एक्ट्रेस ने खुलकर बात की है और बताया है-मेरा मानना है कि एक क्रिएटिव होने के नाते हमारा सबसे जरूरी काम है सुनना। सुनने के बाद ये समझ होना बहुत जरूरी है कि हमें उनमें से क्या रखना है और क्या नहीं। मैं इन चीजों को देखती भी नहीं। एक महिला के तौर पर मैं ऐसी बातों को दर्जा नहीं देती, क्योंकि ये आगे बढ़ने में बाधा के समान हैं।

बस अपने काम पर फोकस करती हूं और मेरी कोशिश यही रहती है कि काम को और कैसे बेहतर

किया जा सके। कुल मिलाकर कहा जाए तो मैं अपने काम को एक सेवा के तौर पर देखती हूं और इसे ऐसी ही जारी रखना चाहती हूं।

आपको बता दें कि फिल्म स्त्री 2 के गाने आज की रात... की रिलीज के वेटर्न एक्टर अनु कपूर ने सिद्धार्थ कनन के पॉडकास्ट में तमन्ना भाटिया को लेकर दूधिया बदन वाली टिप्पणी की थी, जिसके बाद उनकी काफी आलोचना भी

हुई। हालांकि, अभिनेता इन मामले में कई बार अपने बयान का गलत मतलब निकालने और तमन्ना से माफी मांगने की बात भी कही है। अभिनेत्री तमन्ना भाटिया की पिछली फिल्म द वन बॉक्स ऑफिस पर कुछ खास कमाल नहीं दिखा पाई थी। बात की जाए उनकी अपकमिंग मूवी के बारे में तो उसका नाम रागिनी एमएमएस 3 है, जिसकी निर्माता एकता कपूर हैं।

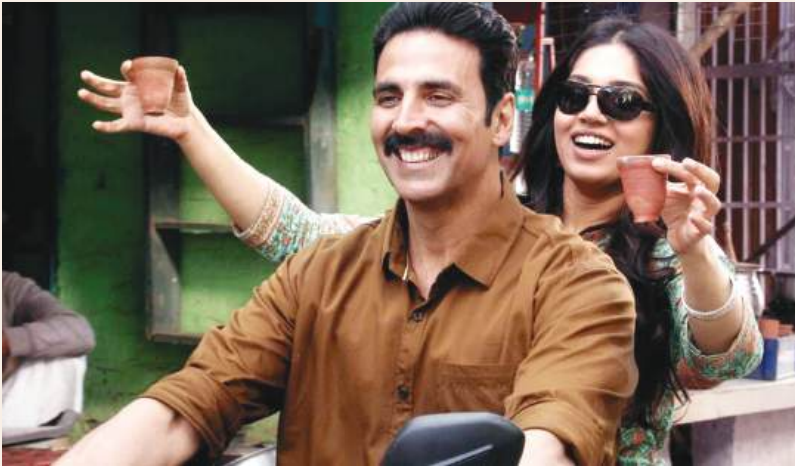


4 साल बाद अक्षय कुमार संग बनेगी भूमि पेडनेकर की जोड़ी

अक्षय कुमार का नाम अपनी अपकमिंग मूवीज को लेकर चर्चा में बना रहता है। लंबे समय से निर्देशक प्रियदर्शन संग एक आने वाली अनटाइटल मूवी को लेकर अक्की लगातार सुर्खियां बटोर रहे हैं। अब अक्षय की इस फिल्म को लेकर बड़ी खबर सामने आ रही है, जो लीड एक्ट्रेस से जुड़ी हुई है।

बताया जा रहा है कि अक्षय कुमार की इस अपकमिंग अनटाइटल फिल्म के लिए एक्ट्रेस के लिए मेकर्स की तलाश पूरी हो गई है। वह अभिनेत्री 4 साल बाद अक्की के साथ बड़े पर्दे पर वापसी करने जा रही है। किसी भी फिल्म के लीड एक्टर और लीड एक्ट्रेस के मामले अक्सर सिनेमाई गलियारे में चर्चा का विषय बनते हैं। फिलहाल इस मामले में अक्षय कुमार और निर्देशक प्रियदर्शन की आगामी अनटाइटल फिल्म छाई हुई है।

हालांकि, अभी इस मामले की आधिकारिक पुष्टि होना बाकी है। अगर ऐसा होता है तो भूमि 4 साल बाद अभिनेता अक्षय कुमार के साथ सिल्वर स्क्रीन पर वापसी करती नजर आएंगी। आखिरी बार ये दोनों कलाकार साल 2022 में आई फिल्म



रक्षा बंधन में एक साथ दिखाई दिए थे, जो कि बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप रही थी।

इतना ही नहीं साल 2017 में अक्षय कुमार और भूमि पेडनेकर की जोड़ी पहली बार फिल्म टॉयलेट- एक प्रेम कथा में नजर आई थी, जो कि कमर्शियल तौर पर बॉक्स ऑफिस पर हिट साबित हुई थी। अब ये दोनों स्टार्स एक दूसरे के

साथ तीसरी फिल्म करने के लिए कमर कसते हुए दिखाई दे सकते हैं। सिर्फ टॉयलेट एक प्रेम कथा और रक्षा बंधन ही नहीं बल्कि भूमि पेडनेकर अभिनेता अक्षय कुमार की एक फिल्म में कैमियो रोल प्ले करती हुई नजर आ चुकी हैं, जिसका नाम है खेल खेल में। 2024 में आई इस कॉमेडी ड्रामा में भूमि ने छोटी से भूमिका अदा की थी।

ऑब्सेशन में दिखेगा कृति सेनन-वरुण धवन का जादू

वया आप भी ब्लॉकबस्टर फिल्म ऑब्सेशन के ओटीटी पर रिलीज होने का इंतजार कर रहे हैं और इसे देखने के लिए एक्साइटेट हैं तो आपकी एक्साइटमेंट और भी ज्यादा बढ़ने वाली है। क्योंकि इस फिल्म से अब बॉलीवुड एक्टर्स कृति सेनन और वरुण धवन भी जुड़ गए हैं। जी हां, अब कृति सेनन और वरुण धवन ऑब्सेशन का हिस्सा हैं लेकिन पर्दे के पीछे। दरअसल इन दोनों कलाकारों ने हॉलीवुड की हॉरर फिल्म ऑब्सेशन के हिंदी वर्जन के लिए अपनी आवाज दी है। यह घोषणा ऐसे समय में हुई है जब भेड़िया 2 में उनके फिर से साथ



आने को लेकर अटकलें लगाई जा रही थीं। हाल ही में कृति सेनन ने एक वरुण धवन और अमर कौशिक के साथ एक वीडियो शेयर किया और कुछ एक्साइटेट प्रोजेक्ट आने का हिट दिया। जिससे लोगों ने उनेक भेड़िया 2 में नजर आने की हिट समझा। दोनों ने 2022 में रिलीज हुई भेड़िया में काम किया था, जो बॉक्स ऑफिस पर हिट रही थी।

ऑपरेशन सिंदूर में लीड रोल निभायेंगे विवेक अग्निहोत्री

विवेक अग्निहोत्री और प्रोड्यूसर भूषण कुमार दोनों मिलकर 'ऑपरेशन सिंदूर' पर आधारित एक फिल्म बनाने जा रहे हैं। यह फिल्म एक बड़े और देशभक्ति से जुड़े विषय पर होगी, जिसे लेकर अभी से काफी चर्चा शुरू हो गई है।

विवेक अग्निहोत्री की आगामी फिल्म ऑपरेशन सिंदूर सच्ची घटनाओं से प्रेरित होगी। इसकी कहानी लेफ्टिनेंट जनरल केजेएस टाइन डिल्लों की किताब ऑपरेशन सिंदूर: द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ इंडियाज डीप स्ट्राइक्स इनसाइड पाकिस्तान पर आधारित है। फिल्म में 6 मई से 10 मई 2025 के बीच हुए इस ऑपरेशन की पूरी कहानी को विस्तार से दिखाया जाएगा। वैरायटी इंडिया की रिपोर्ट के मुताबिक,



बॉलीवुड अभिनेता कार्तिक आर्यन ऑपरेशन सिंदूर में मुख्य भूमिका निभाने वाले हैं। कार्तिक अपनी मौजूदा फिल्म कैप्टन इंडिया का काम पूरा करने के बाद ऑपरेशन सिंदूर पर काम शुरू करेंगे। कैप्टन

इंडिया का निर्देशन शमित अमीन कर रहे हैं। यह फिल्म यमन में हूती संघर्ष की पृष्ठभूमि पर आधारित है और फिलहाल इसकी शूटिंग चल रही है। ऑपरेशन सिंदूर के जरिए कार्तिक आर्यन पहली बार निर्देशक विवेक अग्निहोत्री के साथ काम करते नजर आएंगे।

फिल्म 'पेद्दी' में अपने किरदार को लेकर जान्हवी ने जताया दुख

जान्हवी कूपर हाल ही में शो कॉफी विद करण 9 में पहुंची। यहां उन्होंने अपनी फिल्म पेद्दी में अपने किरदार के ऑब्जेक्टिफिकेशन (वस्तु की तरह पेश किए जाने) पर बात की। उन्होंने माना कि वह ऑब्जेक्टिफिकेशन को रोकने के लिए और बेहतर कर सकती थीं। उन्होंने इस फिल्म से जुड़े विवाद में अपनी भूमिका की जिम्मेदारी ली है।

बातचीत के दौरान, शो के होस्ट करण जौहर ने जान्हवी से उस आलोचना के बारे में पूछा, जो फिल्म में उनके किरदार को दिखाए जाने के तरीके को लेकर हुई थी। बुची बाबू सना के निर्देशन में बनी इस फिल्म में राम चरण अहम किरदार में थे। इस स्पोर्ट्स ड्रामा फिल्म में जान्हवी के किरदार को लेकर काफी विवाद हुआ था। आलोचना का जवाब देते हुए, जान्हवी ने कहा कि यह बात उनके मन पर लगातार बोझ बनी हुई है। उन्होंने माना कि फिल्म में उनके किरदार को जिस तरह से पेश किया गया, उसे अलग तरीके से दिखाया जा सकता था। उन्होंने कहा, इस तरह की कहानी का हमारे समाज पर जो नकारात्मक असर पड़ सकता है, खासकर मेरे जेंडर पर, वह मेरे मन पर एक भारी बोझ की तरह है।

यह शर्मिंदगी हमेशा मेरे साथ रहेगी। क्या मैं और कुछ कर सकती थी? क्या मैं और अधिक सतर्क रह सकती थी? बिल्कुल, हां। क्या यह हद से ज्यादा ऑब्जेक्टिफिकेशन था? क्या इसने कहानी के जरिए यौन उत्पीड़न को भी बढ़ावा दिया? हां। लेकिन अब मैं बस इतना कर सकती हूं कि यह सुनिश्चित करूं कि ऐसा दोबारा न हो।

अभिनेत्री ने आगे कहा और हां, मुझे यह कहते हुए अच्छा नहीं लग रहा क्योंकि ऐसा लग सकता है कि मैं अपनी गलती दूसरों पर डाल रही हूं, मगर बात यह है कि आपको निर्देशक की बात सुननी पड़ती है। जैसे-



योगी जी...केडीए की झोली में करोड़ों-अरबों का राजस्व कहां से आए...

□□□ प्रांजुल मिश्रा/4पीएम न्यूज़ नेटवर्क
कानपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जब मंच पर खड़े होकर दहाड़ते हैं तो उनके मुख से एक शब्द अक्सर सुनाई देता है भ्रष्टाचारी बचेगा नहीं हमारी जीरो टॉलरेंस नीति की सरकार है मतलब भ्रष्टाचार के खिलाफ जीरो टॉलरेंस भी बर्दाश्त नहीं किया जाएगा लेकिन जीरो टॉलरेंस का अब जिम्मेदार अधिकारियों ने मजाक बना कर रख दिया है कथनी व करनी में अंतर सा दिखाई देता है असर सरकार की इमेज दागदार करने में जुटे हैं। भू-माफिया सरकारी भूमि पर कब्जा करने वाले और सरकारी माल चट करने वाले भ्रष्टाचारी और माफिया सीएम योगी आदित्यनाथ के हाथिए पर हमेशा रहते हैं लेकिन अधिकारी किस तरह से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को गुमराह करके अपनी जेब भरने में जुटे हैं।

इसका अंदाजा केवल इस बात से लगाया जा सकता है जब कानपुर विकास प्राधिकरण में उपाध्यक्ष की कुसी मदन सिंह गर्ब्याल ने संभाली थी तो उनका उद्देश्य साफ था भ्रष्टाचार कतई बर्दाश्त नहीं होगा और प्राधिकरण के राजस्व को बढ़ाना उनकी प्राथमिकता थी... पूर्व उपाध्यक्ष मदन सिंह ने एसडीएम रैंक के विशेषकार्यधिकारियों की कर्मों के कारण के साथ-साथ हौंसला बढ़ाने के लिए...युवा लॉबी के हाथों में कमान देते हुए सहायक अभियंताओं को प्रवर्तन प्रभारी बनाकर उनका न केवल कद बढ़ाया बल्कि काम करने का तरीका भी सिखाया लेकिन शर्त साफ थी कंपाउंडिंग रूपी राजस्व से कोई समझौता नहीं होगा और हर 15-20 दिन में प्राधिकरण के राजस्व यानी कंपाउंडिंग को लेकर मीटिंग भी रखते थे.. उस वक्त उनके सामने नंबर

जब निजी राजस्व वसूल रहे हैं अतुल राय...



बढ़ाने के लिए मजबूरी में सहायक और अवर अभियंता राजस्व यानी कंपाउंडिंग पर जोर देते हुए प्राधिकरण की झोली भरने में लगे थे। लेकिन मुखिया बदलने के बाद वही जिम्मेदार अब आपदा को अवसर बनाकर प्राधिकरण के राजस्व को दरकिनार करते हुए अपने लिए निजी राजस्व वसूलने में लग गए हैं।

प्रवर्तन जोन 1 में हो चुके कई हादसे

प्रवर्तन जोन 1 बिरहाना रोड जनरलगंज, नौवड़ा, आर्य नगर स्वरूप नगर, आर्य नगर और जागमऊ में घड़ले से अवैध निर्माण जारी है एक्स्ट्रा पर एक्स्ट्रा स्लैब पड़ रही है हाल ही में जागमऊ में छज्जा गिरने से एक बच्चा समेत 7 लोग घायल हो गए थे जिसमें 50 वर्षीय सावित्री नाम की एक महिला की मौत भी हो गई थी उसके बाद भी कानपुर विकास प्राधिकरण के जिम्मेदार अधिकारियों के आशीर्वाद से मौत की इमार्तें सकरी गलियों डेके की चोट पर बना रही है जबकि रक्षाबंधन वाले दिन चमनगंज में एक बिल्डिंग धंस भी गई थी दिल्ली वाली घटना के बाद कानपुर विकास प्राधिकरण द्वारा मजबूरी में उसको डिमोलिश कर दिया था हालांकि जोन 1 में हाल ही में ट्रांसफर होकर आए अवर अभियंता रमाकांत और अवर अभियंता अटल चतुर्वेदी मात्र एक कंकृतली की तरह काम कर रहे हैं जानकारों की माने तो पूरा जोन प्रभारी अतुल राय के अनुसार



चल रहा है 80 प्रतिशत ऐसे निर्माण हैं जो अवर अभियंता रमाकांत और अटल चतुर्वेदी के ट्रांसफर होने के पहले से प्रवर्तन प्रभारी अतुल राय के आशीर्वाद से जारी हैं। अगर उन सभी के खिलाफ तगड़ा एक्शन लेते हुए उन्हें सील करके शमन करया जाए तो दिवाली के पहले प्राधिकरण की झोली में करोड़ों रुपए का राजस्व आ सकता है...देश में 4 पीएम संस्थान की निष्पक्ष पत्रकारिता एक मिशन बन चुकी है हो सकता है 4 पीएम संवाददाता की निष्पक्ष पत्रकारिता के कारण बौखलाये बिल्डर और जिम्मेदार अधिकारी योजनाबद्ध तरीके आजकल डेड में चल रहे झूठे मुकदमों में पत्रकारों को फसाना, आरोपों में घिराना, धमकाना या हमले करवाना जैसे तमाम कृत्य करवा सकते हैं यदि 4पीएम के संवाददाता के साथ किसी भी तरीके के षड्यंत्रपूर्वक फंसाने का अगर प्रयास हुआ तो इसके जिम्मेदार प्रवर्तन प्रभारी अतुल राय और जिनकी खबर 4 पीएम अखबार में छप चुकी है वह सभी बिल्डर होंगे....।



जोन 1 जहां करीब 300 से अधिक अवैध निर्माण

दरअसल कानपुर विकास प्राधिकरण के प्रवर्तन जोन 1 की अगर बात करें तो यह जोन सबसे बड़ा है करीब 300 से अधिक अवैध निर्माण हैं करीब 150+ ऐसे निर्माण हैं जिसमें एक्स्ट्रा पर एक्स्ट्रा स्लैब पड़ी है इस तरह से अगर आंकड़ा निकाला जाए तो परदेज और कंपाउंडिंग निकाली जाए तो एक सामान्य कैलकुलेशन के अनुसार देखा जाए तो 70-80 करोड़ से लेकर करीब 1 अरब से भी ज्यादा तक का प्राधिकरण के राजस्व को लाम मिल सकता है बशर्त कंपाउंडिंग में आने वाली पूरी रकम को निर्माण करता या मवन स्वामी जमा करें तो... शहर के सुनियोजित विकास के लिए यह बड़ी धनराशि काम आ सकती है कई ऐसे भी निर्माण हैं जिनमें अकेले एक-एक निर्माण से अगर सही ढंग से कंपाउंडिंग रेशियो निकाला जाए तो करोड़ों रुपए केवल एक निर्माण से निकल आता है पूरी धनराशि अगर निर्माणकर्ता जमा करें तो प्राधिकरण की झोली भर सकती है। लेकिन प्राधिकरण के राजस्व हित की किसी को परवाह ही कहा है यहां तो जिम्मेदार केवल अपनी झोलियां भरने में जुटे हैं निर्माणकर्ता पूरी कंपाउंडिंग की रकम को जमा ही कहा करता है कुछ रकम फाइल को रन कराने के नाम पर जमा कर देता है जिससे उसके कार्य में विघटन उत्पन्न ना हो उसके बाद निर्माण अध्याशित होने के बाद बिल्डिंग की बची धनराशि राजस्व के खाते में जमा ही नहीं होती है और इसमें उसे जोन के जिम्मेदार अधिकारी भी पूरा सहयोग करते हैं। नाम न छापने की शर्त पर प्राधिकरण के एक जिम्मेदार कर्मचारी ने बताया ज्यादातर बिल्डर और बड़े अकिविट जनरल प्रभारी अतुल राय के संपर्क में डायरेक्ट हैं सुपरवाइजर और अभियंताओं से उनकी मुलाकात ही नहीं हो पाती है और हमारे संवाददाता के सामने एक ऐसा निर्माणकर्ता भी आया जिसने बताया कि एक चतुर्थ श्रेणी का कर्मचारी उन्हें फोन करके बोल रहा था की राय साहब के केबिन के बाहर आपका इंतजार कर रहा हूं साहब बैठे आकर मिल लीजिए उसने हमारे संवाददाता को बताया मैं एक-एक इंच मानकों और नवशे के अनुरूप बना रहा हूं मैं किसी से नहीं मिलूंगा न ही किसी को एक फूटी कोड़ी दूंगा।

मुंबई इंडियंस को नए कप्तान की है तलाश!

» रोहित पर फिर भरोसा जता सकती है टीम, हार्दिक की विदाई तय

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। आईपीएल 2027 से पहले मुंबई इंडियंस के सामने कप्तानी को लेकर बड़ा सवाल खड़ा हो गया है। कोचिंग स्टाफ में बड़े बदलाव के बाद अब फ्रेंचाइजी को तय करना है कि टीम की कमान अनुभवी रोहित शर्मा को सौंपी जाए या भारतीय टी20 टीम के उपकप्तान तिलक वर्मा को भविष्य के कप्तान के रूप में तैयार किया जाए। मुंबई इंडियंस के पास कप्तानी के लिए सूर्यकुमार यादव और जसप्रीत बुमराह जैसे अनुभवी खिलाड़ी भी हैं, लेकिन टीम प्रबंधन के सामने सबसे बड़ी चुनौती अगले सीजन के साथ-साथ भविष्य की योजना को ध्यान में रखकर फैसला लेने की है।

पिछले तीन सीजन से टीम की कप्तानी कर रहे हार्दिक पांड्या के अगले सीजन में इस भूमिका में बने रहने की संभावना भी कम मानी जा रही है। रोहित शर्मा मुंबई

इंडियंस को अपनी कप्तानी में पांच बार आईपीएल चैंपियन बना चुके हैं। ऐसे में फ्रेंचाइजी के लिए एक बार फिर उन पर भरोसा जताना सबसे सुरक्षित विकल्प हो सकता है। रोहित अगले साल आईपीएल के दौरान 40 साल के हो जाएंगे। हालांकि, पिछले कुछ सीजन में रोहित को मुख्य रूप से इम्पैक्ट प्लेयर के तौर पर इस्तेमाल किया गया है। रोहित का अनुभव, दबाव में फैसले लेने की क्षमता और टीम को एकजुट रखने का कौशल मुंबई इंडियंस के लिए अहम साबित हो सकता है। खासकर तब, जब टीम 2027 के बाद होने वाली मेगा नीलामी से पहले अपने मौजूदा संयोजन के साथ खेल सकती है। दूसरी ओर, तिलक वर्मा मुंबई इंडियंस के लिए लंबे समय का विकल्प बन सकते हैं। वह फ्रेंचाइजी के भरोसेमंद बल्लेबाजों में शामिल हैं और भारतीय टी20 टीम के उपकप्तान भी हैं। तिलक को कप्तानी सौंपने से मुंबई इंडियंस को अगले पांच साल या उससे अधिक समय के लिए नेतृत्व तैयार करने का अवसर मिल सकता है। हालांकि, उनके पास रोहित जैसी कप्तानी का अनुभव नहीं है।

पूर्णेकर मर्डर केस में सरकार साजिशकर्ताओं को बचा रही : आदित्य

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। शिवसेना (उबाठा) नेता आदित्य ठाकरे ने महाराष्ट्र सरकार पर पार्टी नेता प्रदीप पूर्णेकर की हत्या के मुख्य साजिशकर्ताओं को संरक्षण देने का आरोप लगाया। शिवसेना (उबाठा) के मानपाड़ा वार्ड प्रमुख पूर्णेकर की 29 सितंबर को हत्या कर दी गई थी। उन्हें पहले गोली मारी गई और फिर धारदार हथियारों से हमला किया गया।

राज्यसभा सदस्य संजय राउत के साथ यहां एक संवाददाता सम्मेलन में वर्ली के विधायक आदित्य ने कहा, प्रदीप पूर्णेकर की हत्या स्पष्ट रूप से राजनीतिक हत्या है।

पीके और राजद मिले तो हारेगा एनडीए

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। एमएलसी चुनाव के नतीजों ने एक नई बहस को जन्म दे दिया है। राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव की बेटी और पार्टी नेता रोहिणी आचार्य ने 29 अक्टूबर 2026 को सोशल मीडिया पर एक फॉर्मूला दिया-टीजे व पीके मतलब बीजपी एनडीए जीरो। रोहिणी का तर्क है कि अगर रजद के तेजस्वी यादव और जन सुराज के प्रशांत किशोर हाथ मिला लें, तो बिहार में एनडीए को शून्य पर समेटा जा सकता है।

यह फॉर्मूला एमएलसी चुनाव के उस आंकड़े पर टिका है, जहां राजद और जन सुराज के वोटों को जोड़कर देखा जाए, तो एनडीए कई सीटों पर पीछे छूट जाता है।

» महागठबंधन को जिताने का रोहिणी आचार्य ने बताया फॉर्मूला

रोहिणी आचार्य ने एक्स पर पोस्ट में साफ लिखा, बिहार में हुए एमएलसी चुनावों ने बिहार में एनडीए व भाजपा को हराने का फॉर्मूला दे दिया है। राजद और जन सुराज को मिले वोट को अगर जोड़ दिया जाए तो सभी 8 सीटों पर प्रथम चरण में ही हार जाएगी। रोहिणी ने आगे कहा कि भाजपा को हमेशा विपक्ष के बिखराव का फायदा मिला है। अगर विपक्ष एकजुट होकर वोटों का बंटवारा रोके, तो एनडीए को हराना पूरी तरह मुमकिन है।

एक पिस्टल, दो मैगजीन और तीन कत्तल!

» गोलियां बरसाने के बाद ऋषभ बोला—भैया जल्दी आ जाइए, गोली चल गई है

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। साआदतगंज के नौबस्ता स्थित ब्राह्मण टोला में 24 अक्टूबर को हुए तिहरे हत्याकांड का वीडियो सोशल मीडिया पर सामने आया है। वीडियो में मुख्य आरोपी ऋषभ कथित तौर पर एक के बाद एक तीन लोगों पर गोलियां बरसाता दिखाई दे रहा है। परिजन चीखते-चिल्लाते रहे, लेकिन आरोपी का हाथ नहीं रुका। आरोप है कि ऋषभ ने पहले शंभू तिवारी, फिर शिवा तिवारी और आखिर में सुयश को गोली मार दी।

ऋषभ के चाचा और बहन पर 25-25 हजार का इनाम

तिहरे हत्याकांड में नामजद मुख्य आरोपी ऋषभ के चाचा राजेश शुक्ला और बहन दिव्या पर पुलिस ने 25-25 हजार रुपये का इनाम घोषित किया है। दोनों हत्याकांड के बाद से फरार बताए जा रहे हैं। पुलिस और सर्विलांस की टीमें लगातार उनकी तलाश में संभावित ठिकानों पर छापील कर रही हैं।

सामने आए वीडियो में गोली लगने के बाद एक व्यक्ति काले रंग की कार के पास जमीन पर गिरता दिखाई देता है। आसपास अफरातफरी मच जाती है। इस बीच आरोपी ऋषभ हाथ में पिस्टल लेकर सड़क पर घूमता और गुस्से में चिल्लाता नजर आता है हैरान करने वाली बात यह है कि तीन लोगों पर गोलियां चलाने के बाद भी आरोपी मौके से भागता नहीं है। वह फोन पर किसी को घटना की जानकारी देते हुए कहता सुनाई देता है—

भैया, गोली चल गई है, जल्दी से आ जाइए। वहीं, जमीन पर घायल पड़ा व्यक्ति दर्द से कराहते हुए कहता है—गोली लग गई है भैया। तीन लोगों को गोली मारकर बोला—सेल्फ डिफेंस में चलाई गोली! वीडियो में आरोपी बार-बार खुद पर हमला होने का दावा करता सुनाई दे रहा है। वह कहता है, मुझे गुम्फों से मारा, इतने लोग थे, सबको गोली मारी मैंने और सेल्फ डिफेंस में मारी हालांकि, आरोपी के आत्मरक्षा के दावे की पुष्टि पुलिस जांच से ही हो सकेगी।

लोकतंत्र बचाने की रैली से घबराई सत्ता? व्यापार, ट्रेन और नौकरी के आदेश पर छिड़ा सियासी संग्राम खतरे में लोकतंत्र, बचाने का दिन: कांग्रेस

ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग पर कल रामलीला मैदान में जुटेगा विपक्ष

व्यापार प्रभावित होने की दलील पर कांग्रेस का पलटवार, लाखों लोग आएंगे तो चाय, नाश्ते, होटल, टैक्सी और कपड़े के कारोबार को मिलेगा फायदा

कांग्रेस का आरोप, रैली रोकने के लिए तरह-तरह के हथकंडे अपना रही मोदी सरकार

» ट्रेनों के रद्द होने और कार्यकर्ताओं को परेशान किए जाने के आरोपों के बीच यूपी में सरकारी नौकरी से जुड़े आदेश पर भी सवाल; विपक्ष बोला—आवाज उठाने का अधिकार छीनने की कोशिश

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत जनता की आवाज होती है लेकिन जब यही आवाज सत्ता के लिए असुविधाजनक होने लगे तो सवाल उठाना लाजिमी है। दिल्ली के रामलीला मैदान में प्रस्तावित इंडिया गठबंधन की कल होने वाली रैली अभी हुई भी नहीं है मगर उसके इर्द गिर्द सियासी संग्राम तेज हो चुका है। कांग्रेस इसे केवल एक राजनीतिक सभा नहीं बल्कि मताधिकार की रक्षा और चुनावी प्रक्रिया की जवाबदेही से जुड़ी निर्णायक लड़ाई बता रही है। पार्टी ने नारा दिया है 'चलो दिल्ली, वोट बचाओ, देश बचाओ'।

निशाने पर हैं मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार और केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार है। विपक्ष की मांग है कि चुनाव आयोग से जुड़े उसके सवालियों का जवाब दिया जाए और ज्ञानेश कुमार को पद से हटाया जाए। दूसरी तरफ रैली के आयोजन दिल्ली के कारोबार पर उसके संभावित असर और उत्तर प्रदेश में सरकारी नौकरियों से संबंधित आदेश को लेकर बहस ने इस आंदोलन को और राजनीतिक बना दिया है।

कांग्रेस का आरोप है कि रैली में बड़ी संख्या में लोगों के जुटने की संभावना से सरकार असहज है और उसे कमजोर करने के लिए अलग अलग रास्ते अपनाए जा रहे हैं। कहीं कारोबार प्रभावित होने की दलील सामने रखी जा रही है कहीं कार्यकर्ताओं के दिल्ली पहुंचने में बाधाएं पैदा किए जाने का आरोप है तो कहीं सरकारी नौकरी से जुड़े आदेश को आंदोलनकारियों के लिए चेतावनी के रूप में देखा जा रहा है। छत्तीसगढ़ कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने उत्तर प्रदेश के आदेश को तुंगलकी फरमान बताते हुए दावा किया कि सरकार रैली से घबरा गई है। कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने भी दूसरे राज्यों से आने वाले लोगों के सामने बाधाएं खड़ी किए जाने का आरोप लगाया है। इस पूरे विवाद में सबसे दिलचस्प सवाल व्यापार को लेकर है। रैली से दिल्ली के कारोबार को नुकसान होगा या फायदा? विपक्ष का तर्क है कि हजारों नहीं बल्कि लाखों की संख्या में लोग राजधानी पहुंचेंगे तो होटल, भोजनालय, चाय-नाश्ते की दुकानों, टैक्सी सेवाओं और कपड़ा बाजार को बहुत लाभ मिलेगा। कांग्रेस महासचिव के.सी. वेणुगोपाल ने हर भारतीय से रैली में शामिल होने की अपील की है। राहुल गांधी के नेतृत्व में एसआईआर को लेकर सवाल उठा रहा है।



यूपी में सरकारी नौकरी का आदेश आंदोलनकारियों पर दबाव का आरोप

रैली से पहले उत्तर प्रदेश में प्रदर्शनकारियों और सरकारी नौकरी से जुड़े आदेश ने राजनीतिक विवाद को और तीखा कर दिया है। छत्तीसगढ़ कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने इस आदेश को 'तुंगलकी फरमान' करार दिया और आरोप लगाया कि सरकार एक नवंबर की रैली से घबराकर ऐसे कदम उठा रही है। उनका कहना है कि संविधान प्रत्येक नागरिक को अपनी बात रखने और शांतिपूर्ण प्रदर्शन करने का अधिकार देता है। ऐसे में सरकारी नौकरी से जुड़े प्रावधानों को लेकर उठे सवालों पर सरकार को स्पष्टता देनी चाहिए। इस आदेश के जरिए आंदोलन करने वालों पर दबाव बनाया जा रहा है। उनके मुताबिक सरकार चाहे जितनी कोशिश कर ले युवा छात्र और कार्यकर्ता रैली में शामिल होंगे। कांग्रेस ने इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और विरोध के लोकतांत्रिक अधिकार से जोड़ दिया है। पार्टी की नजर में यह आदेश केवल प्रशासनिक फैसला नहीं बल्कि ऐसे समय में आया कदम है जब विपक्ष सरकार और चुनाव आयोग को घेरने के लिए बड़े प्रदर्शन की तैयारी कर रहा है।



वोट का सवाल, जवाबदेही की मांग और ज्ञानेश कुमार पर निशाना

कांग्रेस महासचिव के.सी. वेणुगोपाल ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर जारी वीडियो संदेश में देशवासियों से एक नवंबर को दिल्ली पहुंचने की अपील की। उन्होंने रैली को 'चलो दिल्ली, वोट बचाओ, देश बचाओ' का नाम देते हुए कहा कि लोकतंत्र पर हमला हो रहा है और अब आवाज उठाने का समय आ गया है। वेणुगोपाल ने आरोप लगाया कि मतदाता सूची से करीब 13 करोड़ नाम हटाए गए हैं और अलग-अलग राज्यों में मतदाता सूची को लेकर गंभीर शिकायतें सामने आ रही हैं। कांग्रेस ने



इन्हें अपने आंदोलन का प्रमुख आधार बनाया है वेणुगोपाल का कहना है कि जब विपक्ष सवाल पूछता है तो उसे लाठीचार्ज और हिरासत जैसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। उन्होंने साफ कहा कि कांग्रेस न सुप होगी और न डरेगी। उनके मुताबिक लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी इस लड़ाई का नेतृत्व कर रहे हैं और सत्ता से जवाब मांग रहे हैं। वेणुगोपाल ने देशवासियों से इस संघर्ष में साथ खड़े होने की अपील करते हुए कहा कि लोकतंत्र का भविष्य दांव पर है।

इंडिया गठबंधन की रैली तय कार्यक्रम के अनुसार होगी

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने भी स्पष्ट किया है कि इंडिया गठबंधन की रैली तय कार्यक्रम के अनुसार होगी। पार्टी का कहना है कि यह प्रदर्शन चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाने और मतदाता अधिकारों की रक्षा की मांग को व्यापक जनसमर्थन दिलाने के लिए आयोजित किया जा रहा है। कांग्रेस सांसद कुमारी शैलजा ने संसद से सड़क तक विपक्ष की आवाज दबाए जाने का आरोप लगाया। वहीं, सांसद मनीष तिवारी ने भाजपा के लोकतंत्र बचाओ अराजकता हटाओ मार्च पर सवाल उठाते हुए कहा कि यदि छीने गए मताधिकार वापस मिल जाएं तो ऐसे राजनीतिक टकराव की जरूरत ही नहीं रह जाएगी।



प्रियंका गांधी ने रामलीला मैदान पहुंचकर तैयारियों का लिया जायजा



कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड़ा ने रामलीला मैदान पहुंचकर तैयारियों का जायजा लिया। इससे पार्टी की ओर से आयोजन को बड़े स्तर पर व्यवस्थित करने की कोशिश का संकेत मिलता है। पवन खेड़ा ने उम्मीद से अधिक लोगों के आने का दावा किया है। दूसरी ओर, रैली में वास्तव में कितने लोग पहुंचेंगे, इसका आकलन आयोजन के दिन ही संभव होगा। फिलहाल कांग्रेस इसे बड़े जनसमर्थन के प्रदर्शन में बदलने की तैयारी कर रही है।

ट्रेनों के रद्द होने का आरोप, दिल्ली पहुंचने की तैयारी पर सवाल

रैली से पहले परिवहन को लेकर भी आरोप-प्रत्यारोप तेज हैं। कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने दावा किया कि कई राज्यों में लोगों को दिल्ली पहुंचने से रोकने की कोशिश की जा रही है। उन्होंने तेलंगाना में ट्रेनों के रद्द होने का मुद्दा उठाया। दीपक बैज ने भी कहा कि उनकी पार्टी ने रैली में शामिल होने के लिए विशेष ट्रेन की मांग की थी। उनके अनुसार, पहले निर्धारित राशि जमा कराने के बाद ट्रेन उपलब्ध कराने की बात कही गई लेकिन बाद में ट्रेन रद्द कर दी गई कांग्रेस नेताओं का कहना है कि ट्रेनों रद्द

होने या यात्रा की व्यवस्था प्रभावित होने के बावजूद कार्यकर्ता पीछे हटने वाले नहीं हैं। पार्टी कार्यकर्ताओं में उत्साह का दावा करते हुए नेताओं ने कहा कि विभिन्न राज्यों से लोग दिल्ली पहुंचने की तैयारी कर रहे हैं। कांग्रेस नेता देवेंद्र यादव के मुताबिक रैली में आने वाले लोगों की सुविधा के लिए पानी, चिकित्सा सहायता, बैठने की व्यवस्था, प्रवेश द्वार और आवागमन के रास्तों पर चर्चा की गई है। उदय भानु ने युवाओं की भागीदारी को लेकर भी उत्साह जताया।

कारोबार के नाम पर विरोध की राजनीति? कांग्रेस ने पूछा—नुकसान किसका होगा

रैली को लेकर एक बड़ा विवाद दिल्ली के व्यापारियों के हितों का भी खड़ा किया जा रहा है। जनतांत्रिक गठबंधन से जुड़े पक्षों की ओर से रैली को व्यापारियों के हितों के खिलाफ बताए जाने के बाद कांग्रेस ने पलटवार किया है। विपक्ष का कहना है कि लोकतांत्रिक विरोध को कारोबार के लिए खतरा बताना अधूरी तस्वीर पेश करना है। यदि देश के अलग-अलग राज्यों से बड़ी संख्या में लोग राजधानी पहुंचते हैं तो उनके ठहरने भोजन करने स्थानीय परिवहन इस्तेमाल करने और खरीदारी करने से व्यापार को गति मिलेगी। कांग्रेस का यह तर्क राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है। किसी बड़े आयोजन से स्थानीय कारोबार पर सकारात्मक और नकारात्मक

दोनों तरह के प्रभाव संभव हैं। यातायात में बदलाव मार्ग बंद होने या सुरक्षा व्यवस्था से कुछ दुकानों को असुविधा हो सकती है जबकि होटल, भोजनालय, परिवहन और खुदरा बाजार को अतिरिक्त ग्राहक मिल सकते हैं। यही वजह है कि कांग्रेस व्यापारियों से टकराव के बजाय उनके साथ खड़े होने का संदेश दे रही है। उसका तर्क है कि मताधिकार की रक्षा और व्यापारिक हितों को एक-दूसरे के विरुद्ध खड़ा करने की जरूरत नहीं है। लोकतंत्र में विरोध प्रदर्शन भी हो सकता है और कारोबार भी चल सकता है बशर्ते प्रशासनिक प्रबंध प्रभावी हों और आम लोगों को अनावश्यक परेशानी न हो। विपक्ष अब इसी सवाल के जरिए रैली के विरोध को राजनीतिक मुद्दा बना रहा है।

रैली से मिलेगा व्यापार को फायदा

- 1 - चाय/नाश्ते की दुकानों को ग्राहक मिलेंगे बड़ी संख्या में लोगों के दिल्ली पहुंचने से स्थानीय खानपान कारोबार को अतिरिक्त ग्राहक मिल सकने का कांग्रेस का दावा।
- 2 - होटल और परिवहन क्षेत्र को काम मिलेगा बाहर से आने वाले लोगों की जरूरतों से होटल, टैक्सी, ऑटो और अन्य स्थानीय परिवहन

- 3 - कपड़ा बाजार को मिलेगा लाभ दीपावली के आसपास खरीदारी करने वाले लोगों से खुदरा बाजार को फायदा होने की संभावना है।
- 4 - असुविधा का समाधान प्रशासन की जिम्मेदारी यातायात, सुरक्षा और मार्ग परिवर्तन से कुछ कारोबार प्रभावित हो सकते हैं। इसका समाधान बेहतर व्यवस्था है न कि लोकतांत्रिक विरोध को स्वतः व्यापार विरोधी घोषित करना।
- 5 - कांग्रेस का सवाल कि यदि रैली में आने वाले लोग स्थानीय बाजारों में खर्च करेंगे तो पूरे आयोजन को व्यापारियों के हितों के खिलाफ बताने का आधार क्या है?